Text Dark And Light Within The Book Only

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182375

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. [illegible] Accession No. [illegible]

Author [illegible]

Title [illegible]

This book should be returned on or before the date last marked below.

❀ श्रीः ❀

मानस-माधुरी

रचियता—

भारती--भूषण, कविता--कलाधर,
व्याख्यान--वारिध, साहित्य--रत्न
श्री मानस हंस शिरोमणि--आदि-
आदि अनेक उपाधि विभूषित--

गोस्वामी

श्री पं० 'विन्दुजी' महराज,

रिसर्च स्कॉलर श्रीरामचरित मानस।

प्रकाशक—

प्रेमधाम—वृन्दाबन,

सन् १९४५] [मूल्य १)

प्रकाशक—
कथा--कार्यालय,
प्रेमधाम, वृन्दावन (मथुरा)

परिवार्धित द्वतीय संसकरण

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

सूचना

बिना लेखक की आज्ञा कोई सज्जन इस पुस्तक के पद प्रकाशित करने का प्रयत्न न करें ।

विनीत—
'बिन्दु'

मुद्रक—
ऐंगलो अरेबिक प्रेस,
कोठी राजा दीन दयाल,
दीन दयाल रोड,
लखनऊ ।

श्रीहरिः

अपने सरकार से दो दो बातें।

दीनबन्धु ! हँसोगे तो अवश्य ?

और यह सोच कर हँसोगे कि, श्री तुलसी तथा सूर की कवितायें क्या कम थीं ? जो इस तुक्कड़ ने इधर उधर के कुछ शब्द जोड़ कर अपने को भी कवि कहलाने का प्रयत्न किया है ! और वह भी श्रीराम चरित्र मानस के भावों को चुराकर !

ठीक है। परन्तु, यह तो कहिये कि, अनेक आदर्श मनुष्यों के होते हुये भी आप क्यों मनुष्य बने। अनेक चोरों के रहते हुये आपने भी-माखन की, वस्त्र की, चित्त की और विश्व नेत्रों की, चोरियां क्यों की !

आप कहोगे कि यह मेरी बाल क्रीड़ा थी।

तो भगवन् मेरी भी यह बाल क्रीड़ा ही समझिये। यद्यपि कविता के किसी विषय का ज्ञान नहीं है, और न यही ज्ञान है कि कवि कहते किसे हैं। परन्तु, (कुछ कहूँगा अवश्य) बस इसी आवेश में जो कह डाला वही तुम्हारे सामने है।

आप कहोगे कि—जब कुछ जानते ही नहीं तो 'विन्दु कवि' क्यों बन गये ?

भगवन् ! सच कहना, मैं विन्दु कवि बना हूँ, या तुमने बनाया है ? यदि मैं बना हूँ तो दण्ड भोगने का अधिकारी हूँ। और यदि तुमने ही बनाया है ? तो फिर मुझे क्यों कहो ? तुम्हीं जानो।

! क्या यह भूल गये:—

"हौं तो सदा खर को असवार तिहारो ही नाम गयन्द चढ़ायो।"

आप कहोगे कि, जब लिख ही लिया और पुस्तक तइय्यार ही होगई तो मुझे समर्पण क्यों करते हो ?

नाथ ! प्रेरणा तुम्हारी है, और कर्म हमारा; फिर तुम्हीं ने तो यह आज्ञा दी है कि-"कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन"

फिर तुम्हारे कर-कमलों में समर्पण न हो ! तो, किसके हो ? क्या बता सकते हो ?

फिर भीलनी से बेर, सुदामा से तन्दुल और विदुर से भाजी, लेने पर ही जब कुछ दिया है; तो मुझसे भी 'मानस माधुरी' लेकर ही तो भक्ति दान दोगे ?

अतः यह मेरा शिशु चापल्य

आपके ही कर कमलों में हठपूर्वक—

समर्पित है।

श्री चैत्र कृष्ण एकादशी।
सं० २००१
वृन्दावन

आपका ही—

हठीला 'विन्दु'

ॐ

प्रार्थना

जै जै श्रीगणेश, गिरिजा, महेश, व्यास, शुक,
पवन कुमार पद पंकज मनाऊँ मैं ।
जै जै ऋषि बालमीक, जै जै सूत शौनकादि.
जै जै पूज्य गुरुदेव ध्यान चित्त लाऊँ मैं ॥
जै जै श्री गोसांई दास तुलसी कृपा समुद्र,
जै जै पितु देव राम शरण रिझाऊँ मैं ॥
जै जै देवि शारदा जननि जै जै रामायण,
दीजिऐ अशीश जानकीश गुणगाऊँ मैं ॥

नाम-महिमा !

(१)

लाता है पवित्र भाव, मानस-भवन मध्य,
पातक मिटाता, प्रेम-ज्योति को जगाता है ।
गाता है तभी तो जीव, राघवेन्द्र के चरित्र,
चित्त में उपासना का चित्र खिंच जाता है ।।
आता है जहान से महाजनो का खाता लिये,
'बिन्दु' जो जवाहिरात भजन कमाता है ।
माता है, पिता है, भ्राता, जीवन-विधाता,
नाता नामही का राम-सुख-दाता से मिलाता है ।।

(२)

गीध, गज, गणिका, अजामिल, निषाद-राज,
स्वर्ग में सिधारे कौन साहब--सलामते ।
ब्याध औ कसाई हरि-नाम ते सगाई लेत,
यवन बड़ाई लेत बचन हराम ते ।
'बिन्दु' पितु-मातु, परिवार ते निकारे गये,
न्यारे भये जाति-पांति हू ते गेह-ग्राम ते ।
काम के गुलाम, श्रुति-बाम, अघ धाम,
जिन्हैं रामहू न तारते तरे सो राम-नाम ते ।

* * *

(३)

यह जग युद्ध करिबे को है विचित्र ठाम,
जीव जीतबे को कलि-काल सरदार है ।
वासना की बरछी, विलासन के पैने तीर,
भ्रम को त्रिशूल तापै माया की कटार है ।
'बिन्दु' कवि काम, क्रोध, लोभ मोह, दम्भ आदि,
प्रबल प्रतापिन को पड़त प्रहार है ।
किन्तु या प्रकार के विकार दल मारिबे को,
ढाल है मकार और रकार तलवार है ।

* * *

नास्तिक या राक्षस वर्णन ।

[४]

द्रोही दीन-क्रन्दन के, साधु सुरवृन्दन के,
रूप छल-छन्दन के, रूपक प्रलाप के ।
शुभ कर्म—नाशक, अधम के प्रकाशक,
अधीन-तन त्रासक, पथिक पथ पाप के ।।
'विन्दु' दुख-दायक उपद्रव—सहायक,
अनीति के विधायक, नायक दाप-ताप के ।
जोगके न जापके, तिलक के न छाप के,
न और के न आपके, न माईके, न बाप के ।

* * *

[५]

जुग पलटावैं, शान धर्म को मिटावैं खल,
जानै कौन जाये कुल मूरख चपाट के ।
वेद का जलाव, साधु-सुर पै चलावैं शस्त्र,
भूतल हिलावैं मानो मंत्र हैं उचाट के ।।
'विन्दु' कवि कलि के कराल मजबूत भूत,
काज करैं कोटि क्रूरता, कपट-काट के ।
और के न ठाट के, न खोर के न खाट के,
न हाट के, न बाट के, न घर के, न घाट के ।।

* * *

ब्रह्मा का पृथ्वी को समझाना ।

(१०)

आयेंगे अवश्य निर्बलों के बन्धु, दया सिंधु,
धर्म द्रोहियों की शान धूल में मिलायेंगे ।
लायेंगे अनाथों के लिये समस्त सुख साज,
'विन्दु' कवि सोते हुए देश को जगायेंगे ॥
गायेंगे अधर्मियों के शीश पै स्वतन्त्र गीत,
कण्ठ में खलों के यम-बन्धन बँधायेंगे ।
धायेंगे सवारी छोड़ दीन-हित-कारी-नाथ,
चक्र-धारी चक्र को चलाते हुए आयेंगे ॥

* * *

अग्नि आशीर्वाद ।

[११]

हे महिपाल सुनों, ऋषि मन्डल ने शुभ वैदिक मन्त्र उचारे ।
पूरी भई मन की अभिलाष, कुयोग के रोग भये सब न्यारे ॥
रानिन को यह बांटियो 'विन्दु' सुयज्ञ प्रसाद यथा निरधारे ।
विप्र बशिष्ठ के मत्य-विचार से, होंहिगे चार कुमार तुम्हारे ॥

* * *

श्रीराम का कौशिल्या को पूर्व कथा सुनाना ।

(१२)

मनु-रूप धारि कीन्हीं याचना पिता ने,
तू ने रूप सत रूपा धारि वचन सुनायो है।
देत हौं प्रमाण तप-थान तीर्थ नैमिष को,
मेरे ही समान सुत बर-दान पायो है॥
'विन्दु' कवि सुनके धरनि को विलाप,
और देवन को दाप देखि कौतुक रचायो है।
तीन-लोक-त्राता विश्वगतिको विधाता माता,
तेरे प्रेम-नाता हेतु पुत्र बनि आयो है॥

* * *

कौशिल्या--प्रार्थना ।

(१३)

धन्य धन्य नाथ! सूर्यवंश को सनाथ कीन्हो,
लौकिक--विहार को विचार कर लीजिए।
आजुलौं रही जो दीनता अधीनता पुकार,
ऐसी सुत-हीनता-व्यथा को हर लीजिए॥
'विन्दु' कवि प्रभुता प्रभाव तो प्रसिद्ध ही है,
याते चित्त-बीच पुत्र-भाव भर लीजिये।
देखौं विष्णु को स्वरूप रूपक अनूप अब,
एहो सुर-भूप बाल-रूप धर लीजिए॥

* * *

अवतार ।

(१४)

जिनको न पायो पार शेष, श्रुति शारद ने,
षट-शास्त्र भाखैं बार-बार निराकार में ।
तीनों लोक, चौदह भुवन रचनार जो हैं,
गणना नहीं है जग-जनित-विकार में ।।
'बिन्दु' कवि सार जो हैं जगत असार में,
आकार जो हैं वर्ण में, प्रकाश अन्धकार में ।।
भूमि-भार टारिवे के हेतु अवतार ले के,
सोई करतार आये कौशिला अगार में ।।

* * *

सर्वस्व दान ।

(१५)

पन्ना, पोखराज, पुष्पराग की मची है लूट,
मानो मणि, रत्न के बिटप लगे होने से ।
गायक, गुणी, पुराण-वाचक, कवीन्द्र आदि,
सकल प्रसन्न चित्त हैं दरिद्र खोने से ।।
'बिन्दु' कवि जिनको मिला है खूब पारितोष,
उनके उड़े हैं होश कोष-धन ढोने से ।।
पाये अनहोने दान विप्र, याचकों ने,
आज कौशलपुरी के कोने-कोने भरे सोने से ।।

* * *

आशीर्वाद।

(१६)

सुख दरसावैं, मोद-मंगल मनावैं,
गेह गेह गोहरावैं कौशिला के क्लेश मन्द भे।
पुष्प बरसावैं, द्वार तोरन बँधावैं,
द्रव्य-भूषण लुटावैं, मानों नष्ट कष्ट-फन्द भे।
बिथिन सिचावैं 'विन्दु' केवड़ा गुलाब-जल,
आरती जगावैं ऐसे मगन अनन्द भे।
चित्त-चाव चोगुन कै चरचा चलावैं चहूँ,
चौथे पन चक्रवर्ति जी के चारि चन्द भे।।

* * *

पालना।

(१७)

परम प्रसिद्ध सर्व सिद्ध, सिद्ध सेव्य जो हैं,
सृष्टा-रूप से जो सृष्टि नींव डालने में हैं।
पूज्य विष्णु-रूप से कृपालता विशाल जो हैं,
शंभु-रूप से जो काल दण्ड घालने में हैं।।
'विन्दु' कवि विपुल शरीर धरि बार-बार,
जो समस्त भूमि-भक्त-भार टालने में हैं।
जो हैं तीनों लोक पालने सम्हालने में वेही,
नृप लालने जू ह्वै कै पौढ़ पालने में हैं।।

* * *

श्री कौशिल्या जी से श्री शंकर जी की याचना

(१८)

कियो करै दया-दृष्टि सर्वदा दिगम्बर पै,
द्वार देहरी ते मोहिं टालना दियो करै।
दियो करै दान मुख चन्द्र की छटाको नित्य,
दरश भिखारी को बेहाल ना हियो करै॥
हियो करै याचक निहाल राखिबे को 'बिन्दु',
लालना तिहारो और ख्याल ना लियो करै।
लियो करै ख्याल एक ही सवाल पालना को,
पालना-बिहारो मेरो पालना कियो करै॥

* * *

दशरथ द्वारा विश्वामित्र-स्वागत।

(१९)

दिन आजको धन्य महामुनिराज, कृपालना कीन्हीं सुभायन की।
रसना केहि भांति बखान करै, जो दशा हिय चौगुने चायन की॥
तप-तेज भरी तव मूरति 'बिन्दु', महोषध है जग-तायन की।
यह भूमि पवित्र भई गृह की, जब डारि दई रज पायन की॥

* * *

विश्वामित्र याचना ।

(२०)

जाने दीजिए न रघुवंश की अटल कीर्ति,
शक्ति-मूर्ति अवधपुरी में लाने दीजिए ।
लाने दीजिए न मुझे मन में अपार क्रोध,
जीवन सुखद साधु को बिताने दीजिए ॥
नाने दीजिए न मेरी याचना को 'विन्दु' कवि,
युगुल कुमारों द्वारा लाभ आने दीजिए ।
आने दीजिए न सत्यता की शान में कलंक,
रघुनाथ जी को मेरे साथ जाने दीजिए ॥

* * *

दशरथ को विश्वामित्र का समझाना ।

(२१)

मोह में पड़े हो, प्रेम-पथ में अड़े हो,
बड़े कड़े चित्तवाले हो महीप, दीप ज्ञानके ।
हिम्मत न हार दो, विसार दो विचार सभी,
युगुल कुमार होंगे जाहिर कृपान के ॥
'विन्दु' कवि दोनों बलवान हैं कला-निधान,
मर्म्म जान के भी कर्म क्यों करो अजान के ।
टालक महीं के भार, घालक अरी के,
इन्हें बालक न जानो ये हैं पालक जहान के ॥

* * *

अस्वीकृति।

(२२)

ज्ञानी-वर, बानी-वर, मुनी, मौन ध्यानी-वर,
सोचि के सयानो बुद्धि काढ़िये कलाम को।
नाहीं ना निकारिहौं जो अंगद पुरंदर का,
हुकुम न टारिहौं गुलाम बिन दाम को॥
'बिन्दु' कवि वारि-तट, बाग, बन, बास लीजै,
सकल पुरान लीजे आपही के काम को।
ग्राम लीजै, ठाम लीजै, राज, धन-धाम लीजै,
काढ़ि लीजै चाम पै न नाम लीजे राम को॥

* * *

वशिष्ठ का दशरथ को समझाना।

(२३)

काहे को नृपाल! मन में बिहाल होत ऐसे,
पाथ के सुकाज कछु संशय न लीजिए॥
कौशिक मुनीश जिन ईशहू को कीन्हे बश,
तिनकी अशीश पै महीश जू पतीजिए॥
'बिन्दु' कवि मोहि ना भरोसो है खरो सो खूब,
राम त्यागि आप हू हिये में तोष कीजिए।
मेरी बात मानिके सुधर्म पहिचान के,
सुजान! विश्वामित्र को कुमार दान दीजिए॥

* * *

ताड़का-वधके समय श्रीराम के भाव।

(२४)

एक तो प्रथम ही परीक्षा का दिवस आज,
भानु-वंशियों का एक अयश न लूटेगा।
कीर्ति-वीरता भी एक ओर जा छिपेगी,
धर्म और बाहु-बल का प्रसिद्ध पात्र फूटेगा॥
'बिन्दु' कवि चाहे मुझे कायर पुकारें लोग,
किन्तु नीति पथ का विचार तो न टूटेगा।
क्षमा कीजिये महर्षि माननीय मुनिनाथ,
नारी पर हाथ रघुनाथ का न छूटेगा॥

* * *

युद्ध।

(२५)

उथल-पुथल सी मची है समर-स्थल में,
प्रबल अघी-दल को कल ना परत है।
आँधी धुन्धकार सी अपार राक्षसी कतार,
कालिमा में कज्जल पहार निदरत है॥
'बिन्दु' कवि रामानुज शर की झड़ी न भूमि,
झारि झुण्ड ही ते रक्त झरना झरत है।
सहित उमंग मानो भानुजा सरस्वती के,
संग--संग शोण गंग--सङ्गम करत है॥

* * *

सुबाहु-बध ।

(२६)

कैधौं बाण लागनही बनिगो अदृश्य,
कैधौं बाण ही की आतुर गती को दरसायगो ।
कैधौं बाण तेज ही की ओट में छिपानों कहूँ,
कैधौं बाण बनके सघन में हिरायगो ॥
'विन्दु' कवि कैधौं बाण हू को माया-चक्र दै कै,
बाण-पुर जाय बाण बाहु में समायगो ।
कैधौं बाण ह्वै कै बाण त्राण में बस्यो है,
कैधौं बाण ही को प्राण ह्वै कै बाण में बिलायगो ॥

लक्ष्मण-रणावेश ।

(२७)

शत्रु दल काट कर, पाट कर युद्ध-क्षेत्र,
ठाट कर शान्ति का खड़े हैं वीर बाने में ।
वस्त्रों पै सहस्रों राक्षसों के रक्त छींटे पड़े,
उपमा अनूठी एक आती है बताने में ॥
'विन्दु' कवि पातक हटा तो घटा भार कुछ,
हर्ष है धरा को भी उदारता दिखाने में ।
अस्तु फणि रत्न जी को रत्न-गर्भा ने आज,
चुन के दिये हैं लाल-रत्न नज़राने में ॥

गंगा माहात्म्य ।

(२८)

तरल तरंग तैरते ही खण्ड-खण्ड होती,
सभी शक्ति कलि के प्रचण्ड परिवार की।
अंग में पवित्र रेणुका के लगते ही,
रह जाती है न रज भी असंख्य पाप-भार की।
'बिन्दु' बलिहारी ऐसी त्रिपथ विहारिणी,
विशुद्ध रूपधारिणी दुलारी करतार की।
पातक प्रसंग ढङ्ग भङ्ग करने में,
अनङ्गारि से अधिक है प्रशंसा गंगधार की॥

◆

(२९)

एक बार पातकी अनेक शिव रूप धारि,
बैठे शिव लोक जाय लहत उमंगा को।
भूत-प्रेत सोचैं या में कौन हैं हमारे नाथ,
नन्दी कहै धारी कौन गरल भुजंगा को?
'बिन्दु' कवि खोजत गणेश कौन बाप मेरो,
शैलजा पुकारैं कौन स्वामी मेरे संगा को?
लखि कै बेढंगा दृश्य, बोले श्री अनंगा रिपु,
काहू करो दंगा ? ये प्रताप हैं श्री गंगा को।

◆

जनक जी का श्रीराम दर्शन !

(३०)

राघव किशोर चित-चोर को विलोकत ही,
बार--बार मचलि--मचलि मन रहिगो ।
थकत न लोचन सँकोच हू न सोचैं कछु,
जग-ताप मोचन प्रताप दाप दहिगो ॥
नेही राग-रंगते विरागी आजु लौं जो हतो,
सोई अनायास अनुराग पन्थ गहिगो ।
'विन्दु' कवि प्रेमानन्द सिन्धु-बीच बूड़ि-बूड़ि,
नृपति विदेह जी को ब्रह्मानन्द बहिगो ॥

नगर-दर्शन !

(सखी सम्वाद)

(३१)

सुन्दर, सलोने, सुकुमार हैं उदार-चित्त,
सार सुखमा के सरदार शुभ देश के ।
सन्त-हित-कारी, मद-हारी दुराचारिन के,
प्रीत के प्रकाशक, बिनाशक कलेश के ॥
'बिन्दु' कवि इन्दु के समान ही स्वरूपवान,
बाँकी आन, बान, शान वंशज दिनेश के ।
धनु-शर-धारे, मुनि--यज्ञ--रखवारे, दोनों,
प्राण-प्यारे, लाल हैं दुलारे अवधेश के ॥

* * *

(३२)

अवध--बिहारी, धनुधारी, सुख कारो त्यागि,
आँखैं अब और का, न—आदर विशेखैंगी
शंभु, विधि, विष्णु जी से अधिक स्वरूपवान,
कौन दूसरा है समता में जिसे लेखैंगी ।
'विन्दु' कवि मृदुता, मधुरता, मनोहरता,
परख चुकी हैं बार बार क्या परखैंगी ।
आली ! सुधा-प्याली सो निराला मतवाला छबि,
देखी है जो आज कभी देखी है न देखैंगी ।

◆

(३३)

सुकवि-सुधाके सिन्धु, बाँके वसुधा के वीर,
श्रद्धा के अमूल्य रत्न, यत्न सुविधा के हैं ।
निगम-कथा के ज्ञाता, आरत-व्यथा के त्राता
शूरता प्रथा के रण देखि शत्रु थाके हैं ।।
'विन्दु' कवि ताके ,जाके क्लेश, ताके नाश कीन्हें,
प्रेमी क्षीणता के, हीनता के दीनता के हैं ।
मान्य मिथिला के, बर सीय नवला के योग्य,
तारक शिला के ये कुमार कौशिला के हैं ।

◆

(३४)

ताड़का को मारा जिस बाण से इन्होंने,
उसी बाण से कठोर दण्ड गर्वघट फोड़ेंगे ।
सींक से ही सिन्धु-पार भेजा है निशाचर को,
वज्र--धनु को भी सप्त सिन्धु पार छोड़ेंगे ।।
'विन्दु' पद--रज से तरी है नारि–पाहन की,
उसी तन्त्र–मन्त्र का प्रबन्ध कुछ जोड़ेंगे ।
हाथ की न ताकत लगेगी जब आली,
तो चरण-रेणुका से ही महेश–चाप तोड़ेंगे ।।

श्रीराम-जानकी-साम्य !

(३५)

राम को शरीर हैं जो नील–मेघ के समान,
जनक लली की प्रभा शुद्ध बिजली सी है ।
राम–अंग को है रंग जमुना–तरंग सम,
तामें जानकी हमारी प्रेम–मछली सी है ।।
'बिन्दु' कवि शंकर–जटा की भाँति राम-रूप,
सीय–सुघराई सुर– सरिता ढली सी हैं ।
उपमा मिली है भली राम है भ्रमर श्याम,
मैथिली छबीली स्वर्ण कंजकली सी है ।।

◆

मुखचन्द्र वर्णन ।

(३६)

रामचन्द्र जी का मुख-चन्द्र ही अदालत है,
मीठे बोल शुद्ध न्याय-ग्रन्थ दरशाते हैं।
कुन्डल सिपाही लिए ज़ुलुफ़ जंजीर,
मोर–पंख चपरासी खासी हाज़िरी बजाते हैं॥
'विन्दु' कवि नैन पेशकार हैं दयालु,
दोनों कान हैं वकील मामले को समझाते हैं॥
प्रेम जज साहब कृपा की कुरसी पै बैठ,
दीन फ़रियादियों के फ़ैसले सुनाते हैं॥

पुर बालक !

(३७)

चक्रवर्ति अवध–नरेश के कुमार तुम,
हम धन-हीनों से सनेह क्यों बढ़ावोगे ?
तुम हो विमल बुद्धि, विद्या, सभ्यता के रूप,
हम से असभ्यों का समीप क्यो बुलावोगे ?
एक अश्रु 'विन्दु' की ही सेवा है हमारे पास,
इसी प्रेम से क्या कभी दरश दिखावोगे ?
खोटे हैं, खरे हैं या बुरे हैं या भले हैं, किन्तु–
सत्य कहो मित्र ! हमें भूल तो न जावोगे ॥

◆

रामचन्द्र जी पुर बालकों से ।

(३८)

मित्र-मन-मानस में पाकर सनेह-नीर,
कमल समान सदा फूले और फूलेंगे ।
चक्रवर्ति ताज क्या है ? तीनों लोक-राज्य सुख,
प्रेम के मुकाबले, न तुले हैं, न तुलेंगे ।।
'बिन्दु' कवि भोले–भाले भक्तों के अनोखे-चोखे,
टेढ़े सीधे बचन कुबूले हैं, न कुबूलेंगे ।
बार–बार जग के हजार बार भूले, किन्तु-
प्रेमियों के प्यार को न भूले हैं, न भूलेंगे ।।

(श्यामसुन्दर के अँग की प्रतिमा में वर्षा, शरद, वसन्त ऋतु

(३९)

जित जित श्याम तन-छवि छहरात जात,
तित तित श्याम घन घोर झगरत जात ।
जित जित वदन-प्रभा तम हरत जात,
तित तित चन्द्र सूर्य ज्योति जरत जात ।।
जित जित मृदु पद--कंज बिहरत जात,
तित तित पंकज को पानिप गरत-जात ।
जित जित नव पट पीत फहरत जात,
तित तित मानहुँ बसन्त बगरत जात ।।

◆

पाँच पक्षी ही वाटिका में क्यों हैं

(४०)

है कितनी रस रास विलास में ?
"चातक" याको हिसाब बताई है ।
बोलनि में किमि माधुरि है ?
सोइ "कोकिल" भाँति समुझाई है ।।
दम्पति लालिमा "कीर" लगाई है ?
नृत्य कला गुण "मोर" समुझाई है ।
नीके बिलोकि के दो उनके मुख,
चन्द्र को न्याय "चकोर" चुकाई है ।।

* * *

मालीगण रामचन्द्र जी से !

(४१)

मोली-गन नेह में मगन ह्वै सुनावैं बैन,
नाथ, आप काहे निज पाइन दुखाइ हैं ।
आयसु हमें जो होय वाटिका ते बीन-बीन,
सुन्दर सुवास ते सने सुमन लाइ हैं ।।
"विन्दु" कवि आप या मुखारविन्द को दिखाय,
एक पुष्प-पाँखुरी हू बाग ते न पाइ हैं ।
चन्द्र मुख जानि सकुचाई हैं प्रसून सब,
रवि मुख जानि कै तुरन्त जरि जाइ हैं ।।

* * *

(४२)

कौशल किशोर, चितचोर बात साँची कहैं-
बाटिका के भीतर न आप जान पाइहैं ।
रावरे मधुर मीठे बैन जाल-फन्दे फँसि,
हम सुख चैन भरी रोजी न गँवाइहैं ॥
"विन्दु" कवि जादूगरी पढ़ि कै पधारे इतै,
सोइ कछु जन्त्र-मन्त्र बाग पै चलाइहैं ।
पाँव को छुवत ही अकास उड़ो पाहन तौ,
हाथ को छुवत ही विटप उड़ि जाइहैं ॥

* * *

(४३)

अधरन आभाते अगस्त्यहू पलास होत,
देखत कपोल कुन्द होत कचनेर से ।
जूही होत गुंजासी बिलोकि दृग को प्रकाश
केश को कला लखे कदम्ब होत केर से ॥
'विन्दु' कवि श्याम-अंग-रंग की तरंगन सों,
बेला बनि जात विष्णु क्रान्तन के ढेर से ।
पीत-पट छाया परे गेंदा से गुलाब होत,
सरसों चमेली होत कमल कनेर से ॥

* * *

विह्वला सखी !

(४४)

लेवे को प्रसून गई सूनी फुलवारी जानि.
अनायाश कोऊ मन्त्र मोहनी पटकिगो ।
साँवरो सलोना कर फूलन को दोना लिए,
टोना से चलाय कछू चित में चटकिगो ॥
'विन्दु' कवि देखत ही मृग मन मोहगयो,
चट पट जाय लट-जाल में लटकिगो ।
विहँसि-विहँसि नैन मारग ते धँसि-धँसि,
आली ! अवधेश लाल उरमें अटकिगो ॥

⁂

(४५)

जानकी तो सुधि ही बिसार देती, जानती जो,
बाटिका के बीच आपदा परेगी प्रान की ।
प्रान को हरन हारी मूरति विलोकि हाय,
पल में हिराय गई हालत प्रमान की ॥
मान की न शान रही, गहो राह प्रेमिन की,
'विन्दु' कवि मैथिली शपथ तेरी जानकी ।
जानकी बखानौं कैसे बात वा अजानकी,
सुजान की सलोनी छटा गाहक है जानकी ॥

⁂

(४६)

चख पूतरी में परयो कौशिला को पूत जाकी-
मूरति अनोखी उर भावना गढ़ित है।
बावरी बनी हौं ! सुधि आवत न देह गेह,
नेह मदिरा सी अंग-अंग में चढ़ति है।।
'विन्दु' कवि जैसी--जैसी काढ़िबे की रीति करौं,
तैसी-तैसी अंतर लौं बेदना बढ़ति है
करि कै ढिटाई ऐसी नैनन समाई सखी,
काहू भाँति कारे की कराई न कढ़ति है।

* * *

(४७)

कोऊ कहै या दीवानी भई, कहूँ बाय को झोका,
लगो मजबूत है।
कोऊ कहैं या बड़ी मद-मस्त है
बाटिका--बीच मिलो अवधूत है ।।
'विन्दु' बतावतीं हैं कोऊ याहि,
विनोद बखान की बानि बहूत है।
कोऊ कहैं पहचान गईं हम,
शीश पै याके चढ़ो कोऊ भूत है।।

* * *

(४८)

बोली भली अली मैथिली की
जा गली में छली में, कथा सो अकूत है।
जोगी जती की मतीन हू ते, जागती-
ज्योति सी, वा गती मजबूत है॥
'विन्दु' सनेह के सिन्धु धँसी
नभ-मानस इन्दुओं हेतु बहूत है।
सूत सो नैन की पुतरी में फँस्यो
भूत नहिं सखि ! कौशिला--पूत है॥

* * *

श्री जानकी जी का राम-दर्शन !

(४९)

प्रीति पुरातन की पहिचान कै,
चित्त की चंचलता सब ख्वै गई।
मोहनी--मूरति मोहन की मन में,
कछू मोहनी मंत्र सी छ्वै गई।
'विन्दु' जकी सी थकी सी खड़ी,
असुवान की धार दृगंचल ध्वै गई।
देखत ही वह साँवरी सूरत—
बेटी विदेह की बावरी ह्वै गई।

* * *

(५०)

उर में उछाह भरि चाह सों गड़ाये नैन,
देखत ही मूरति हिये छिपाय राखी सी।
बोलती न डोलती किलोलती न काहू संग,
अंग की भई है गति पंख-हीन पाँखी सी॥
'बिन्दु' कवि बार-बार ढारि जल नैनन सों,
मोद छकी मौन ह्वै मधुर स्वाद चाखी सी।
त्रिजग न होत चख-पूतरी किशोरी जी की,
राम-रूप-मधु में फँसी है मधु माखी सी॥

श्री जानकी के राम-दर्शन पर सखियाँ!

(५१)

विधि ने स्वरूप को बनाई फुलवाई जौन,
ताके एक-एक बेल-बूटन को खूटे लेत।
तन-जोहिरीन की अनूपम जवाहिरात,
जोहि-जोहि के जुलुफ-जालन में जूटे लेत॥
'बिन्दु', कवि औषधि अमूल्य जग-तापन की,
तोरि-तोरि मानस-खरल मध्य कूटेलेत।
जोरि-जोरि निद्धि जो बटोरो मिथिलेश जू ने,
अवध-किशोर नैन-कोरन ते लूटे लेत॥

(५२)

दावा करि जनक-नरेश पै ख़यानत को,
प्रेम की अदालत में ऊधम उठाये लेत।
रूप को वकील मिल्यो ऐसो जो, विचार-
हाई-कोरट ते लाज की अपील हू हटाये लेत ॥
'विन्दु' कवि भावकी भई है डिगरी विचित्र,
जाके बल बर बस दख़ल जमाये लेत।
चख चपरासी साथ लै के हाय खड़े-खड़े,
मैथिली को मन-कुंज क़ुरक कराये लेत ।

* * *

(५३)

आई जो निहारबे को सूरति सुघर श्याम,
सोई सामने अनूप मूरति नगीची है ;
संग सखियन के सकोच मानि सोचो जनि,
नैन भरि ताकिबे में कौनसी दुचीची है ?
'विन्दु' कवि बीते जात क़ीमती अनेक पल,
पाय कै सुपास ऐसी क्यों निगाह नीची है ?
ध्यान धरि मीची क्यों पलक प्रेम सींची ?
जहाँ देखी ही दरीची नाहिं [illegible] की नगीची है ।

* * *

श्रीराघव का चन्द्र दर्शन ।

(५४)

तू तो है प्रकाश मान केवल जहान ही में,
बाकी ज्योति चौदहों भुवन में जगति है ।
तेरी चाँदनी सों चौगुनी चमकदार वाकी,
चन्द्रिका त्रिलोक अन्धकार को ठगति है ।।
तेरी गति शून्य नभ-मन्डल लौं किन्तु,
जन-मानस-गगन मध्य वाकी बड़ी गति है।
'विन्दु' कवि सीता के मुखार-विन्द-सागर में,
इन्दु ! तेरी शोभा एक विन्दु सी लगति है ।।

* * *

(५५)

सुन्दरता दई शीतलता दई फेरि बनायो पती रजनी को ।

कुण्ड सुधाको भरो हियमें नृप कीन्हो नक्षत्रन की अवली को ।।

ऐसे उपायन सों जब 'विन्दु' न आयो सियामुख के समनी को ।

क्रोधित ह्वै के विरंचिने काढ़्यो मयङ्कके भाल कलङ्क को टीको ।।

* * *

(५६)

नख में नक्षत्र मुख मण्डल में चन्द्र--सूर्य,
दुति दसनन में सुदामिनी छटान की ।
नैन में त्रिवेनी सैन में समस्त सिद्धि श्रेणी,
भाव में समस्या नव-रस कवितान की ॥
केश में कुटिलता, कुलीनता कटाक्ष में है,
कान में प्रवीनता, अधीनता कथान की ।
'विन्दु' कवि ज्ञान की प्रमान की है बात,
जानकी के अंग अंगन में शोभा है जहान की ॥

साधु-राजा

(५७)

गाल को बजाइ कै न पाइ हो विजय-माल,
चक्रवर्ति-बाल हो विशाल यश लूटेंगो ।
युद्ध को संभाल त्यागिहौ बिहाल ह्वै कै,
जब दुष्ट दल काल को कराल शस्त्र छूटेंगो ॥
'विन्दु' कवि ढाल करवाल के कमाल देखि,
कौन है नृपाल जो विरुद्ध जाल जूटेंगो ।
व्यर्थ के ख़याल त्यागि जावो महिपाल सबै,
चाप-चन्द्र-भाल रामलाल ही सों टूटेंगो ॥

* * *

(५८)

वेश बन आछे; काछे रेशमी–बसन–पीत,
जीति रंग-भूमि भूमि-भूमि कलेश कूटेंगे।
कौन है रणेश सामने जो इनके हो पेश,
हौसले सभी नरेश मन्डल के छूटेंगे॥
'विन्दु' कवि लेशमात्र भी न झूठ जानो यह,
कौशलेश राम के प्रताप सुख लूटेंगे।
देश–धन ठहै कै अवधेश–धन आये,
श्री महेश-धनु भंजि मिथिलेश धन लूटेंगे॥

◆

(५९)

जानते नहीं हो अन्ड-बन्ड बकते हो बात,
एक पलमें उद्दण्डता सभी निकालेंगे।
बलमें अखन्ड भुज-दन्ड रामचन्द्र जी के,
चाप क्या? समस्त सृष्टि-मन्डल उठालेंगे॥
'विन्दु' कवि त्यागि दो घमन्ड को, नहीं तो,
मारतण्ड-वंशी क्रोध की प्रचण्डता सँभालेंगे।
शंभु—कोदण्ड—खण्डन से प्रथम तुम्हारे,
मुण्ड के ही खंड-मुंड [illegible] कर डालेंगे॥

◆

राजाओं से धनुष न उठने पर !

(६०)

साधु कहते हैं है प्रताप यह राघव का,
दुष्ट कहते हैं यह शाप शंभु जी का है।
भूमि कहती है यह पाप दस-कण्ड का है,
देव कहते हैं ताप दीन-मन्डली का है ॥
'बिन्दु' कवि सब अबलाएँ कहती हैं, सखी !
इसमें न अधिकार दूसरे किसी का है।
यह तो चढ़ेगा रामचन्द्र ही से, क्योंकि,
यह धनुष नहीं है सती धर्म जानकी का है ॥

* * *

श्री जानकी जी का प्रेम-प्रण ।

(६१)

मेरी जयमाल ! कै तो सुनले हिये को हाल,
कै तो ह्वै निठुर रोष ही में तन जावै तू ।
कै तो प्रण साथिनी ह्वै प्रण को निबाहि देरी,
कै तो प्रिय-घातिनी ह्वै प्राण हानि जावै तू ॥
'बिन्दु' कवि लाड़ली सखी की लाज राखै सखी
दो में एक बात ही की ठान ठनि जावै तू ॥
दासी बनै साँवरे सुजान के गले की कै तो,
जानकी गले की आज फाँसी बनि जावै तू ॥

* * *

धनुर्भङ्ग ।

(६२)

आसुरी-अलाप लै के, मूढ़ता मिलाप ले के,
कुटिल कलाप आप ही ते जाप जूटिगो ।
छुद्रित की छाप ले के, नीचता की नाप लेके,
सन्तन के जाप ही ते वज्र बाप छूटिगो ॥
'विन्दु' जग-ताप लै के, दीनन विलाप ले के,
कायर प्रलाप, राम को प्रताप लूटिगो ॥
देवन को दाप ले के, सीय को सराप ले के,
रावण को पाप ले के शंभु-चाप टूटिगो ॥

धनु-भङ्ग पर !

(६३)

जानकी स्वयम्बर सभा को ही प्रयाग जानि,
अक्षय-विटप चिथिलेश प्रण लाग्यो है ।
मुनि-मन्डली है तीर्थ विप्र मन्डली समान,
जाने यासों बार-बार प्राण-दान मांग्यो है ॥
'विन्दु' नख-श्रेणी श्वेत लालिमा हथेली,
श्यामताई कर-कंज की त्रिवेणी अनुराग्यो है ।
माधव स्वरूप रामचन्द्र के चरण पाय,
पातकी महेश-चाप ने शरीर त्याग्यो है ॥

जयमाल !

(६४)

जेस भाँति मुझको ललचना पड़ा है आज,
उसी भाँति अब आपको भी ललचाऊँगी।
जैसा था गुमान आपको कमान खींचने में,
वैसा ही सुजान! स्वाभिमानता दिखाऊँगी॥
अधिक विलम्ब से उठी थी जो विरह-ज्वाल,
शीतल सनेह 'बिन्दु' से उसे बुझाऊँगी।
नाथ! तरसाया चाप तोड़ने में आपने तो,
मैं भी जय माल छोड़ने में तरसाऊँगी॥

* * *

(६५)

आदि ही ते श्री गणेश-विष्णु विधि शंभु आदि,
पूजी गई कोटि देवतान की जमात है।
करि करि आरती पुकारती किशोरी नित्य,
श्याम सांवरे सों गांठ जोरिबे की बात है॥
'बिन्दु' राम की न करामात कछू, मैथिली की-
आहन ते पाहन धनुष भयो मात है।
याही हेतु जनक लली के पद-पङ्कज पै,
माथ रघुनाथ जी को झुकि-झुकि जात है॥

* * *

श्री राघव परशुराम से !

(६६)

आप ही समान अवतारी उपकारी जग,
आप ही सी शंभु-भक्ति उरमें भरैय्या है।
आप ही समान दुष्ट--दल को दलैय्या, विप्र,
साधु-सुर-मन्डली की आपदा हरैय्या है॥
'बिन्दु' कवि आप ही समान युद्ध में अशङ्क,
पद-रेणु आप ही की शीश पै धरैय्या है।
परशु निकारि कै विचारिये कृपालु ! आप-
ही को नाम-राशी चाप-खन्डन करैय्या है॥

* * *

(६७)

श्री लक्ष्मण परशुराम से !

मुनिवर ! आप विप्र-भाव ते कहो तो,
रघुवंश अंश पावनते शीश को हटावै ना।
किन्तु एक बात की ही उरमें उठी है शंक,
व्यर्थ कहूँ दूसरो कलंक लग जावै ना॥
'बिन्दु' कवि शिव के समान आपहू को शत्रु,
मेरी तन परसि उपद्रव उठावै ना।
कर पै धरेते जैसे टूट्यो है धनुष,
त्योंही कन्ठ पै धरेते या कुल्हाड़ी टूट जावै ना॥

* * *

(६८)

योगी-राज शंभुने बिसारयो जाहि रोगी जानि,
ब्याधि कष्ट भोगी ह्वै शरीर हू ते घाटिगो ।
द्वीप-द्वीप के महीप--बैद्यन की ओर भई,
तिनकी अनेक औषधीन ते उचाटिगो ॥
'बिन्दु' कवि अपनो विचार कै असाध्य रोग,
आशा त्यागि प्राण की मँजूषा खाट पाटिगो ।
जीर्ण--ज्वर पीड़ित हतो ही जीर्ण चाप,
राम बल को अजीरण भये ते पेट फाटिगो ॥

* * *

(६९)

एक ओर धारे धनु, एक ओर धारे बाण,
एक ओर परशु सुधारे तेज तायो है ।
एक ओर शूल एक ओर लोह-वर्म्म झूल,
एक ओर तोमर, त्रिशूल लटकायो है ॥
'बिन्दु' कवि धन्य भृगु-वंशज मुनीश, तुम्हें,
सन्त-वेश में विचित्र रूपक लखायो है ।
मैंने जान्यो कोऊ है कुशल कारीगरी, इतै—
जनक पुरी में शस्त्र बेचिबे को आयो है ॥

* * *

(७०)

बिगड़ चुकी जो बात फिर बनने की नहीं,
व्यर्थ अपशब्दों के न तीखे बाण छोड़िये
धन्वा है महेश का महेश ही लड़ेंगे खुद,
आप क्यों किसी के झगड़े में सर फोड़िये ॥
'बिन्दु' कवि कुंठित कुठारी से न होगा कुछ,
नाहक मुनीश ! नाक–भौंह ना सिकोड़िये ।
चाप तोड़ने की बात तोड़िये यहाँ ही,
अब प्रेम से मिलाप जोड़ने की बात जोड़िये ।

* * *

(७१)

भूले से न जात जंग-जूझन की बातन में,
भंग और भोजन कबूलें कोस दूरी के ।
तन बल साधन में निबल बने रहैं, पै,
प्रबल बने रहैं भजन बल भूरी के ॥
'बिन्दु' कवि शस्त्र के गहैय्या उन्हें कैसे कहैं,
जो सदा देवय्या हैं अशीष-पग धूरी के ।
बरछी, कटार, तीर, छूरी के न वीर होत,
विप्रवीर होत खोवा--खाँड खीर--पूरी के ॥

* * *

(७२)

श्री राघव परशुराम से !

विप्र वर ! करके तिहारे सङ्ग युद्ध, ब्रह्म-
पातक कलङ्क कहाँ जाय के उतारिहौं ।
पूज्य भृगु--वंश अवतंशी निज अंशी जानि,
कौनि हू प्रकार आप पै न शस्त्र डारिहौं ।।
'विन्दु' कवि वचन विरंचि को दियो है यह,
राम--रूप धारि दुष्ट रावण सँहारियौं ।
अब राम-रूप सों जो राम ही को मारिहौं तो,
रावण सँहारिवे को कौन रूप धारिहौं ।।

* * *

श्री लच्मण जी राघव से !

(७३)

मेरी मानिये तो कछु बिनती सुनाऊँ नाथ !
आप-मुनि राज के समीप हू सिधारैं ना ।
जानैं कौन दूसरी उपाधि उठि बैठे ? या ते,
धनु ही पुरानी निज कर में सुधारैं ना ।।
'विन्दु' कवि स्वामी और सेवक दोऊ हैं एक,
कछु अपमान जान तेऊ रोष धारैं ना ।
चाप गुरु को चढ़यो तो चेला जी पधारे,
चाप चेला को चढ़ै तो कहूँ गुरू जी पाधरैं ना ।।

* * *

पत्रिका !

(७४)

जाकी गुरुता-कठोरता पै सिय-ब्याह रच्यो,
जाके टारबे में भूमि भूप-वंश हारयो है ।
जाको ढंग देखि मद शूरन को भंग भयो,
जाको जोर आजुलौं न काहू ने सँभारयो है ॥
'विन्दु' कवि जाको बली बाणासुर, रावण ने,
एक तिल भर हू अवनि ते टारयो है ।
सोई अति प्रवल प्रचण्ड चन्द्र-मौलि चाप,
रामचन्द्र जी ने खण्डि-खण्डि करि डारयो है ॥

श्री अवध में जनक दूत और दशरथ !

(७५)

बोल्यो पौरिया नवीन समाचार पायो नाथ !
नृप ने सुन्यो श्री कौशिला कुमार पायो है ।
बोल्यो पौरिया श्री मिथिलेश ने सँदेश भेज्यो,
नृप ने सुन्यो श्री राघवेश को पठायो है ॥
बोल्यो पौरिया अनन्द कन्द सुख 'विन्दु' लायो,
नृप ने सुन्यो श्री रामचन्द्र कोउ लायो है
बोल्यो पौरिया पधारियो आज मिथिला से दूत,
नृप ने सुन्यो हमारो प्यारो पूत आयो है ॥

◆

(७६)

बातहू न बूझो सुत-नेह में अरुझी मति,
डूबे प्राण-प्रिय के सनेह सिन्धु भौंरे हैं।
अश्रुपात होत जात रोके ना रुकात,
गात-गात में रोमांच दरशात ठाव ठौरे है॥
'विन्दु' कवि विरह निशा को आज पायो भोर,
सो सुख हिलोर में नरेश भये बौरे हैं।
ज्यौंही सुन्यो दूतन के मुख सों प्रणाम शब्द,
राम जानि उर सों लगाइबे को दौरे हैं॥

❖

(७७)

जैसी कृपा कीन्ही है कृपालु के कुमार जू ने,
वैसी ही दयालुता दयालु राखि लीजिये।
पाहन धनुष मेरी आह पै पसीजियो,
आप नर- नाह चित्त-चाह पै पसीजिये॥
'विन्दु' कवि जानि कै वड़ाई, प्रभुताई, तऊ-
करत ढिठाई सो न ध्यान उर दीजिए।
साथ लै वरात रघुनाथ के सुभ्रातन को,
रघु-कुल-नाथ ! मिथिला सनाथ कीजिए॥

❖

बरात !

(७८)

हाथी चले, घोड़ा चले, रथ चले, ऊँट चले,
गाड़ा चले, भाँडा चले, चले जल घट्ट जी ।
वीर चले, धीर चले, बुद्धि के गम्भीर चले,
बाना-पटा ले चले अहीरन के ठट्ट जी ॥
'बिन्दु', कवि क्षत्रि-जाति जोरि कै जमात चली,
राम की बरात में भई है गट-पट्ट जी ।
भक्त चले, भृत्य चले भीर चली भूपन की,
भद्र भूमिदेव चले, चले भाँड—भट्ट जी ॥

बरात--अश्व वर्णन !

(७९)

मुम्ला, चपल, कला राम, केहरी, नकुल,
अनखल, मलेवारी, कन्धारी करोड़े हैं ।
चौहरे, मनोहरे, कल्यान, पंच, कच्छावाड़,
तुरकी, शिकारी, ताज़ी तौर तौर जोड़े हैं ॥
'बिन्दु' कवि दरयाई, दंगली, दरेरी, दुमी,
श्याम कर्ण, मारमी, सुराहिया--न थोड़े हैं ।
गोड़ेवान, गुरजी, कनौड़े, कड़े-जोड़ेदार,
राम की बरात में हज़ारों ज़ात घोड़े हैं ॥

* * *

(८०)

अबलख, सब्ज, मुश्की, तीतरी कुमैती नील,
सुर्मई, सुनहले, सिंदूरिया से रँग हैं।
चित कबरे हैं, भूरिया, मकोय, मोतिया है,
सेतु बन्धी, काठिया, सुर्फदिया सुढँग हैं॥
'विन्दु' कवि कच्छी, ताज़ी खुरासान, चाँपानेर,
लोधिया, अरब, शाहला- के कसे अँग हैं।
बँग के, कलिंग के, अनँग सम साजे—
ऐसे अमित सुरँग रामचन्द्र के तुरँग हैं॥

* * *

विवाह !

(८१)

जोरी गई गाँठ पट पीत चूनरी के साथ,
जोहत ही मोहै मन जड़ित जड़ावरी।
वेदन की शाखैं पढ़ि भाखैं मुनि लोकरीति,
एते में अनूप एक बनत बनवारी॥
'विन्दु' कवि आनन सिया को देखि दूलहजू,
ठांव ही खड़े रहे न आगे बढ़यो पाँवरी।
भूल गईं मन्डप कलश, खम्भ जानकी जू,
साँवरे शरीर की ही देन लागीं भाँवरी॥

* * *

(८२)

एक के समक्ष बैठे एक दोऊ बनी-बना,
मूरति जहाँ है गौरी, गिरिजा, गणेश की ।
बोले महि-देव आदि देवन को पूजौ लाल,
कामना निहाल करौ युगुल-कुलेश की ॥
'बिन्दु' कवि सेंदुर सुमन हाथ लेत ही में,
भई है अचेत दशा लाल अवधेश की ।
भूलि गये पूजिबो महेश प्रिया गौरी जू को,
पूजिबे लगे किशोरी गौरी मिथिलेश को ॥

* * *

कविगण द्वारा जेंवनार प्रशंसा ।

(८३)

नींव खुरमों की है दिवाल है कचौड़ियों की,
खजला किवाड़ द्वार बेसनी धराये हैं ।
कलाकन्द ईंट दही चूने से किले को चुन,
अमृती झरोखे पेड़े सन्तरी बिठाये हैं ॥
तोप गुझियों की है बतासफेनियों के गोले,
दारू मोतीचूर भर मोरचे बँधाये हैं ।
'बिन्दु' कवि भोजन महल मिथिलेश जी के,
तोड़ने को राम के बराती आज आये हैं ॥

* * *

(८४)

दोने-पत्तलों की ज़रा आहट मिली जो कहीं,
'भट्ट' भोजनों के चट्ट-पट्ट टूट जायेंगे।
दाँव देख भाल, पँक्ति मोरचा सम्हाल कर,
तेग़ सी ज़बान मुख म्यान खड़कायेंगे ॥
शत्रु लड्डुओं को वज्रदन्त ही से पीस पीस,
तोड़-फोड़ पेट के गढ़ में ही गिरायेंगे।
'विन्दु' कवि खस्ते खूरमे करेंगे चूर-चूर,
चूरमे में शूरमे को धूर में मिलायेंगे ॥

* * *

जनक-प्रेम !

(८५)

देखत ही सिय-मूरति को निज अंग विफूरति खोवन लागे।
मंत्री सबै मन मौन धरे मिथिलेश की सूरति जोवन लागे ॥
मानो बिराग की राख महीप दृगंचल 'विन्दु' सों धोवन लागे।
ज्ञान की तो मरजाद मिटी कहि 'जानकी-जानकी' रोवन लागे ॥

* * *

बिदाई !

(८६)

यह मैथिली जोति जिया की मेरी, हे कुमार ! हियासों भुलाइयो ना ।
मिथिला-पति-भौन दिया सी रही; मति, थाकी, अबोध खिझाइयो ना ॥
सखियान के साथ हू 'बिन्दु' लली अँखियान ते ओट पठाइयो ना ।
रघुनन्दन प्राण-प्यार करौ, अनजान सिया पै रिसाइयो ना ॥

*

(८७)

जानकी-जानकी जानि सुजान, सुजीवन मानिकै मान करीजो ।
आवने होंय जब ससुरारि, लली सुकुमारि हू को सँग लीजो ॥
और हू एक करी बिनती कवि 'बिन्दु' सदा सो हिये में रखीजो ।
काँकरी हू जो सिया के कभों पग में गड़ै तो पतिया लिख दीजो ॥

*

मन्थरा ।

(८८)

एकै बार बोली तौन सबै आश पूजि गई,
दूजी बार भाखि कछू जीभ को जरावै ना ।
मन ना उदास करौ सुख से निवास करौ,
आप के महल बीच कलह मचावै ना ॥
राम राजा होंय चाहे राजा जी भरत होंय-
"विन्दु" कवि भली बुरी बात समझावै ना ।
एहो महारानी, हमैं काहे की गलानी- हम-
पानी को भरब छोड़ि रानी बन जावै ना ॥

*

कैकेयी !

(८६)

प्राणनाथ, जो पै हौ प्रसन्न निज भामिनी पै,
सत्य-सत्य भाखो जामें जग में न हाँसी हौं ।
माँगौं वरदान दोय जी को पैज पूरी होय,
रोय–रोय कौशिला सहित मेरी दासी हों ।।
“विन्दु” कवि एक तो भरत पूत राजा होंय,
दूसरे प्रसन्न चित्त पुर के निवासी हों ।
त्यागि दास दासी खासी मूरति उदासी करि,
चौदह बरष हेतु राम बन बासी हों ।।

* * *

दशरथ !

(९०)

भामिनी, भई है भानु-वंश की कुठारी किमि ?
लोक पर लोक हू की बातन पै ध्यान दे ।
तेरी या कुचाल सों बिहाल ह्वै हैं लोग सब,
हानि मत मानी ऐसो बानी न बखान दे ।।
“विन्दु” कवि जो पै मेरे प्राण ही भये हैं भारु,
तो पै इन्हें क्रोध-वेदिका पै बलिदान दे ।
काहे निज हाथ करै अवध अनाथ, मेरो–
माथ कोटिले पै रघुनाथ को न जान दे ।।

* * *

श्रीराम जी !

(६१)

राज काज सकल सँभारिहैं भरत बन्धु,
असुर संहारिबे को मैं तो बन जाऊँगो ।
बचन प्रमाण करि चौदह बरस बीच,
चौदहों भुवन की विजय खींच लाऊँगो ।
'विन्दु' कवि तजि के कलेश दीजिए निदेश,
जातें देश देशन में सुयश कमाऊँगो ।
करि के सहाय दुखी दीनन पै, फेरि आय,
माय तेरे पाँयन पै शीश को झुकाऊँगो ॥

* * *

कौशिल्या !

(६२)

याको नहिं कछु रोष हिये,
पुर के सब लोग जो दोष धरेंगे ।
कैकई को न कछू अपराध,
लिखे विधि-अंक न टारे टरेंगे ॥
'विन्दु' यही एक साँसति है—
कछु और अनर्थ के वज्र परेंगे ।
लाल तिहारे सिधारत ही,
महिपाल हू मोहिं अनाथ करेंगे ॥

* * *

बन--कष्ट ।

(६३)

सोने के महल में चँदोवा चारु मोतिन के,
हीरन की झालरैं हिलैं हिलोर खाय के ।
आस पास दासी दास जिन की खवासी करैं,
शीतल शुगन्ध मन्द पवन डुराय के ॥
'विन्दु' दूध-फेन की समान सेजन पै,
पौढ़ि-पौढ़ि अबलौं रहे जो सुख पाय के ।
सोई रघुनाथ शीस मों लगाये हाथ सोये,
पाथरी शिला पैं कुश-साथरी बिछाय के ॥

* * *

निषाद !

(६४)

जोवोरे-चरण रघुराज के निषाद कहै,
धावो वेगि धावो मोह नींद जनि सोवोरे ।
सोवोरे-कृपा की छाँह झुकि के निहारो छवि,
आय हाथ पारस को भूल में न खोवोरे ॥
खोवोरे-शरीर के शकल पाप "विन्दु" कवि,
गंग-जन्म दातन को स्वागत सँजोवोरे ।
जोवोरे-दृगंजन से मञ्जु वर कंजन से,
धोवो फेरि जोवो फेरि धोवो फेरि जोवोरे ॥

* * *

(६५)

अहो राघवेश, नृप-वेश करि मेरे देश,
आप जो पधारे याने यश भरि लैहौं मैं।
दास-आश पूरिबे की शक्ति है तिहारे पास,
और याचना कछू साज हू मजैहौं मैं॥
अधम उधारन पधारैं तो उधारैं मोहिं,
'बिन्दु' अभिलाष-पग-धूरि को धरैहौं मैं।
रूठौ या रिसाव रघुराव मतिभाव कहौं,
पाँव बिन धोये नाव चढ़न न देहौं मैं॥

* * *

(६६)

हाजिर हुजूरी में भयो है दास दीनानाथ,
नेक निज करुणा-नजर से निहार दो।
देत उपहार कहा मुंदरी मणी की मोहिं,
देते हो तो जन्म की कमाई एकबार दो॥
रत्न, धन, धाम 'बिन्दु' काम के न मेरे कछू,
हो प्रसन्न राम, घनश्याम तो करार दो।
पार उतराई सरकार तब जानूँ जब,
पार भव-सागर के मुझ को उतार दो॥

* * *

(१७)

ध्यान द्वारा शम्भु ने विचारा जिन्हें बार-बार,
पाकर न मर्म बोले-क्लिष्ट मानता हूँ मैं!
जिन के लिए विरञ्चि ने भी पुकारा यही,
पाता हूँ न मर्म सर्व सृष्टि छानता हूँ मैं ।।
'विन्दु' कवि वेद शास्त्र-मत कहता है जिन्हें,
नेति-नेति मर्म आपका बखानता हूँ मैं ।
प्यारा भक्त केवट बिचारा कहता है जिन्हें,
हे प्रभु, तुम्हारा सारा मर्म जानता हूँ मैं ।।

* * *

श्री गंगा का मोह !

(१८)

विधि के कमण्डल में प्रगट हुई थी फिर,
गंगा नाम पाया था प्रभाव के बढ़ौते में ।
विष्णु को कुमारी बनी, देवों को दुलारी बनी,
शंकर की नारी बनी चाह के चढ़ौते में ।
किन्तु अब 'विन्दु' मात्र भी न मान होगा मेरा,
सुखद , सुहाग जा रहा है समझौते में ।
क्योंकि मुझ-सी ही एक दूसरी सवति मेरी,
जन्म ले रही है आज केवट-कठौते में ।

* * *

(९९)

कर में सुधारे जात हिय विच धारे जात,
हीनता विचारे जात दीनता उचारे जात ।
सिसकि सम्हारे जात तन मन हारे जात,
पान ही उतारे जात जाति कुल तारे जात ॥
'बिन्दु' रज तारे जात जात के निकारे जात,
रेखा हू उभारे जात दुबकि दुलारे जात ।
चूमि चुचुकारे जात निहुरि निहारे जात,
नैन नीर ढारे जात चरण पखारे जात ॥

केवट--प्रार्थना ।

(१००)

जानैं कैसे भाव में समाने हो कृपा निधान,
विमल विचारवान बुद्धि के सयाने हो ।
सोने की अँगूठी उपहार देत बार-बार,
कौन धर्म मारग सरकार उर आने हो ?
'बिन्दु' कवि नात गोत बात को न त्यागो नाथ,
काहे जात पाँत तोरिबे को हठ ठाने हो ?
केवट हौं मैं तो विधि-सागर नदी को किन्तु--
आप भवसागर के केवट पुराने हो ॥

◆

वशिष्ठोपदेश !

(१०१)

पन्डित प्रवीने यश गावत नवीने नित्य,
लोने सेन संग वीरता मद भीने हैं।
सुन्दर हसीने बाहु बल के न हीने, देत,
शत्रुन पसीने बज्र ते कठोर सीने हैं ॥
'बिन्दु' जिन्हें देवता पती ने मान दीने, विश्व-
करिकै अधीने भये तख़्त नशीने हैं।
ज़ाहिर करीने तीनों लोक वश कीने, ऐसे-
भूमि के नगीने काल देव जी ने छीने हैं ॥

◆

अवध की सखियाँ !

(१०२)

मन में बिठालें तो महान है चलायमान,
झूमता है झूठे जग-प्रेम को हिलोरों में।
मुख में सरस्वती के कारण बसगे नहीं,
क्यों की उसने ही डाला बन के झकोरों में ॥
'बिन्दु' कवि एक ही है सुखद निवास यह,
तीनों ही सुपास कर लेंगे दृग कोरों में।
पुतली में श्यामलाल, सीपी में लषण लाल,
लाड़िलो जी लाल डोरों के हिंडोरों में ॥

◆

भरत !

(१०३)

राज मोहिं दैकै महाराज गये देव लोक,
याते कौन अधिक कृपालुता दिखाइ है ।
मन्थरा विचारी स्वामिनी की हितकारी बनी,
बाहू ते न्यारी बुद्धि कौन दरसाइ है ॥
'बिन्दु' कवि तापै मातु कैकई उदार भई,
कौनि हू प्रकार चैन भरत न पाइ है ।
कोटि हू उपाय करौ राम रघुराय जू के,
पाँय बिन देखे जी की जरनि न जाइ है ॥

निषाद !

(१०४)

तान कै कमान बान ठान कै महान रण,
साँचे स्वामि सेवक की बान धर जाऊँगो ।
राम-पद पानही की शपथ बखानि कहौं,
शूरता भरत जू की धूर कर जाउँगो ॥
'बिन्दु' कवि लाऊँगो न मन में विचार यह,
जीवित रहूँगो युद्ध में कै मर जाऊँगो ।
कै तो राम राज आज कायम करौंगो कै तो,
राम-भ्रात-हाथ घात लागे तर जाऊँगो ॥

◆

श्रीराम जी !

(१०५)

कुल की बड़ाई राजा-नीति दृढ़ताई त्यागि,
जग को भलाई बन्धुताई को विचारिहौं ।
सुयश नसावै चाहै अपयश छावै, देव-
वन्द कलेश पावै तऊ चित्त हठ धारिहौं ॥
'विन्दु' कवि आन जाय, मान जाय, शान जाय,
पै महान प्रेम को प्रमान ना विसारिहौं ।
बात तात मात की टरै तो टरि जाय पै-
भरत जैसे भ्रात की न बात आज टारिहौं ॥

◆

गङ्गोद्धार !

(१०६)

उपकार के युद्ध में शोणित-धार,
सरस्वती-सी अघ छेनी हुई ।
द्विज रावण के तलवार की धार,
सो भानुजा-की-सी निशेनी हुई ॥
फिर मैथिली के दृग-'विन्दु' की धार,
सुजान्हवी-सी गति देनी हुई ।
तन गीध के त्यागने में मिल के,
यह धार ही तीनों में त्रिवेनी हुई ॥

◆

(१०७)

अण गीध का राम सहाय कहो,
त्रयलोक में कीर्ति जगा रहा था।
तन राम की गोद में लेटा हुआ,
दृग-'विन्दु' की अँगुज़ो पा रहा था॥
मन राम के रूप में ऐसा रमा--
बस राम ही सा हुआ जा रहा था।
धन जीवन राम के धाम ही में,
अपना निज धाम बना रहा था॥

* * *

(१०८)

भव के जो त्रिसूल से ऊपर हैं,
प्रभु--गोद वही अविनाशी हुई।
रट राम के नाम की जो थी लगी,
वही शंकर-मूर्ति प्रकाशी हुई॥
दृग राम के 'विन्दु' गिरा रहे थे,
वही जान्हवी को जल राशी हुई।
'अहो, धन्य है--गीध को दण्डक की-
वह कण्टक-भूमि ही काशी हुई॥

* * *

(१०९)

गुरु देव किया कोई योगी नहीं,
न तो माया कभी किसी योगिनी का।
हाँ—चखाता रहा मेरा शोणित 'बिन्दु'
कुवासना आमिष भोगिनी को ॥
पुरुषार्थ भी तो लय हो चुका था,
किये धारणा था जरा रोगनी का।
उस गीध को ऐसी मिली गति क्यों?
दी सहायता एक वियोगिनी का ॥

* * *

(११०)

उस यज्ञ में गीध ने अस्थियों की—
अबला सतिया अनुमान की दी।
प्रण का था श्रुवा, घृत शोणित 'बिन्दु'
पशुबलि देह महान की दी ॥
उपरोहित रावण था जिसने,
शुभ आशिष तीक्ष्ण कृपान की दी।
रघुबीर सुजान की जानकी को,
विरहाग्नि में आहुति जान की दी ॥

* * *

भीलनी !

(१११)

देखत ही रूप दया सिन्धु को सनेह भरी,
देह सुधि त्यागि बार-बार पद लागई ।
दौरि दौरि बेरन के विटप झकोरि झोरि,
मीठे मीठे स्वाद चाखिबे को अकुला गई ॥
गात में रोमाञ्च होत नैनन सों 'बिन्दु' पात,
अति आतुरी सों चाल चातुरी चला गई ।
दीन हितकारी जी को भीलनी गँवारी, चारि,
जूँठे फल दै अनूठे चारि फल पा गई ॥

हनुमन्त की लंका--यात्रा !

(११२)

कैधों आसमान पै सिधायो चन्द्र चूड़ गिरि,
कैधों रथ बाजि त्यागि रवि को पयान है ?
कैधों मूर्तिमान तेज पवन प्रधान भयो-
कैधों इन्द्र--वज्र ही प्रत्यक्ष पक्ष बान है ?
भूधर सुमेरु को प्रमान कैधों 'बिन्दु' कवि,
कैधों दशभाल हेतु कुन्तल कृपान है ?
कैधों हरि-यान कैधों पुष्पक विमान, कैधों,
राघव को बान कैधों वीर हनुमान है ?

* * *

सुग्रीव के प्रति राघव-वचन !

(११३)

दै हौं मैं न कान हे सखा तिहारी बातन पै,
शरण विभीषण को पक्ष आज लेहौं मैं।
लेहौं मैं बिठाय शीस ही पै दशशीस हू को,
और है जो आश्रित त्रिभव साज देहौं मैं॥
देहौं मैं विशुद्ध ज्ञान भरतादि भ्रातन को,
'विन्दु' सत्य भाखौं लोभ को न ताज लेहौं मैं।
लेहौं मैं अखण्ड राज दण्डक विपनि को ही,
रावणहि अवधपुरी को राज देहौं मैं॥

◆

रावण से अँगद-वाक्य !

(११४)

बार-बार बीसभुज, बैर को बढ़ावै जनि,
अरे दशभाल काल आयो तोर बार बार।
बार बार लड़ि है अनेक रूप जो पै धारि,
तो पै हरि जै, है एक बानर मों बार बार॥
बार बार 'विन्दु' रामचन्द्र जी को नाम भज,
नाहिं तो कठिन प्रण मेरो यह बार बार।
बार बार तेरे शीस के उखारि बार,
गरद गुबार में मिलैहौं तोहि बार बार॥

◆

श्री भरत--विरह !

(११५)

अवधि यही है भूमि-भार के उतारने की-
अवधि यही है वन वास के मिटाने की।
अवधि यही है अवधेश-वचनों की ओर,
अवधि यही है अवधेश-पद पाने की ॥
अवधि यही है दर्शकों के दृग 'बिन्दु' की भी,
अवधि यही है राम-राज्य कहलाने की।
अवधि यही है अब के अवध आने की;
न आये तो अवधि है हमारे प्रान जाने की ॥

* * *

(११६)

यदि आना नहीं था तुम्हें तो प्रभो,
मन--मन्दिर ही में समाते नहीं।
मन-मन्दिर में भी समा गये थे,
तो दृगों को छटा दिखलाते नहीं ॥
दिखला ही चुके थे छटा दृगों को,
तो वियोग के 'बिन्दु' रुलाते नहीं।
जब जाना न चाहिए था तो गए,
अब चाहिए आना तो आते नहीं ॥

* * *

(११७)

पूर्व मुख प्रार्थना में वेद-मन्त्र भेजे नित्य.
लौट कर एक भी न आये हैं न आयेंगे।
पश्चिम दिशा में चन्द्र सूर्य भी गए अनेक.
समाचार कुछ भी न लाये हैं न लायेंगे॥
उत्तर दिशा में सरयू के 'विन्दु' देखते हैं—
'विन्दु' कुछ उत्तर न पाया है न पायेंगे।
अस्तु—अब दक्षिण दिशा में प्राण प्यारे पास,
प्राण ही हमारे दूत बन कर जायेंगे॥

* * *

(११८)

जाओ जाओ जानकीश ठहर गये हो जहाँ.
अवधि व्यतीत हो रही है समझाना तुम!
दीनता अधीनता की विनती सुनाना और,
कृश तन हीनता मलीनता बनाना तुम॥
वेदना हृदय की असहाय सौंप देना उन्हें,
विरही दृगों की विन्दु मालिका गिनाना तुम।
फिर भी न आये यदि स्वामी प्राण प्यारे राम,
फिर हे प्राण मेरी देह में न आना तुम॥

* * *

कवि की कामना !

(११९)

उत चन्द्रमा चन्द्रिका शीस है,
उत चागुनी चौतनी भ्राजे रहैं ।
पट नील उतै पट पीत इते,
घन दामिनो की दुति लाजे रहैं ॥
उत भाल पै बिन्दु सुहाग रहै,
इत केशर खौर को साजे रहैं ।
यहि भाँति सदा सरकार दोऊ,
जन के जिय बीच बिराजे रहैं ॥

* * *

मानस--महिमा !

(१२०)

ज्ञान, कर्म भक्ति तीन सरिता गँभीर जिन्हें,
जग तारने को राम-नाम ने उतारा है ।
'बिन्दु' कवि बीच ही में गिरिजा गिरीश के—
समागम विशुद्ध मानसर ने सँभारा है ॥
शम्भु-उर भरि कै उमंग बढ़ि आई,
कढ़ि आई जो त्रिलोचन ते अगम अपारा है ।
होई जनु तुलसी वदन तीर्थ राज ह्वै कै,
विमल त्रिवेणी-सी नहीं पियूष धारा है ॥

* * *

(१२१)

यद्यपि हुए अनन्त कविता-कला के कन्त;
किन्तु इस सन्त-ग्रन्थ का सुपन्थ न्यारा है।
वाणी को मिठास, राम नाम को सुवास व्यास,
छन्द रस रास का विलास क्या सँवारा है ॥
उपमा अनेक बुद्धि-सिन्धु कवियों ने कही,
'बिन्दु' ने परन्तु भाव बिन्दु-सा विचारा है !
मुग्ध करने के लिए राम को गुसाई जी की,
कवितावली ने मैथिली का रूप धारा है ॥

◆

रसना-विलास

हृदय की बात

श्यामसुन्दर ! अभी बहुत कुछ कहना है, और वह सब तुमसे ही कहूँगा, परन्तु ...धीरे धीरे कहूँगा, एक साथ कहने से काम न बनेगा यह तो हृदय के उद्‌गार हैं, कभी कभी निकलते हैं और निकलते ही तुम्हें अर्पण भी कर देता हूँ, ताकि "अहंकार विमूढ़ात्मा कर्ताह मिति मन्यते" के क़ानून में न जकड़ लिया जाऊँ। यदि कहो कि—कहता ही क्या है ? तो क्या करूँ सरकार! आखिर जीव का ही तो हृदय है न, इसे सब्र कहाँ सन्तोष कहाँ ?

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ।
तदपि कहै बिनु रहा न कोई ।

इसलिये कहूँगा तो अवश्य और एक बार नहीं हजार बार कहूँगा ? क्यों की तुम्हारी भी हमेशा की आदत है, कि—दीन, हीन, अबोध बालकों के मुख से कुछ न कुछ सुना ही करते हो, बिना सुने तुम्हें भी क्या चैन पड़ती है ? कदापि नहीं। सांकेत, अथवा गोलोक छोड़कर कपि रीछों की संगति में अथवा ब्रज

के ग्वाल बालों में रहने का कारण ही क्या था ? केवल यही कि वे कुछ तुम्हें कहें, और तुम उनकी बातें सुन कर हंसो। तभी तो श्रुति कहती है, कि वह इस प्रकार सृष्टि संचालन में क्यों चक्कर लगा रहा है ?

'लीलावत्तु कैवल्यम्'

भगवान् वेद व्यास स्पष्ट ही कह रहे हैं कि:—

अहोभाग्ञ महोभाग्ञं, नन्दगोप वृजौकसाम् ।
यन्मित्रं परमानन्द, पूर्ण ब्रह्मसनातनम् ॥

क्या, अब भी आपके विनोदी स्वभाव में शंका है ? फिर मैं ही क्यों छोड़ूं ? जाने फिर यह शरीर मिले या न मिले, तुम्हें फिर कुछ कह सकूँ या न कह सकूँ ? कहीं बना दिया तुमने पशु पक्षी या वृक्ष तो यह मन की मरोर मनमें ही रह जायगी। इसलिये नाथ इस जन्म में जो कहूँगा औरजो खोल कर कहूँगा और जो कहूँगा वह सब तुम्हें ही दे दूंगा, फिर देखूँ कि तुम इससे प्रसन्न होते हो या अप्रसन्न ? कहो रूठोगे तो नहीं ? रूठोगे तो कलम यहीं बन्द कर दूंगा। मगर जरा भी हंसी की रेखा दिखाई दी, तत्काल ही दूसरा भाग लेकर हाजिर हूँगा।

तुम्हारा कृपा दृष्टि द्वारा परिपालित—

वैशाख अक्षय तृतीया
श्री वृन्दावनधाम।

"विन्दु"

॥ श्रीः ॥

रसना—विलास

मंगलाचरण ।

दो० कमल सदृश, कोमल कलित, कमला करके कन्त ।
युग पद श्री भगवन्त के, करिये कृपा अनन्त ।

अभिलाप ।

मन की मनमोहन से जो लगी,
यह प्रेम की डोर कटे न कभी ।
अति शुद्ध अनन्य उपासना की—
हठ से यह चित्त हटे न कभी ॥
जगवासना जूठन सीकरों से,
अनुराग पयोधि फटे न कभी ।
प्रभु के पद कञ्ज पखारने में,
दृग 'विन्दु' की धार घटे न कभी ॥

पूज्यपाद आचार्य द्वारा स्थापित जीव ब्रह्म के द्वादश सम्बन्ध

(१)

ब्रह्म, जीव शेषी, शेष, अंशी, अंश, पिता, पुत्र,
अवतारी और अवतार, पति, दारा है।
गुरु, शिष्य, स्वामी, दास, धर्मी, धर्म, देही,देह,
नियामक, नियम्यादि, भाव का सहारा है॥
रक्षक तथा सुरक्ष्य, उपरोक्त द्वादश में,
सब भाँति जीवन तुम्हारे लिये हारा है।
यदि आप करुणा कृपा के सिन्धु हो ! तो नाथ,
कहना पड़ेगा 'बिन्दु' बेशक हमारा है॥

* * *

अनन्योपासना में श्रीराम और श्रीकृष्ण

(२)

ब्रज तुलसी की कण्ठ कण्ठी हो विराजमान,
श्री तिलक अवधपुरी का रहे माथ में।
सुरति सदा श्री अवधेश के चरित्र में हो,
सुमति सदा हो श्री ब्रजेश गुण गाथ में।
मातु मैथिली सप्रेम गोद में उठा रही हो,
अश्रु 'बिन्दु' पोंछती हो राधा मातु साथ में।
एक हाथ रामचन्द्र जी के चरणों में रहै,
हाथ दूसरा हो कृष्णचन्द्र जी के हाथ में।

* * *

श्रीवृन्दाबन श्रीनिधिबन कुंज श्रीश्यामस्वरूप तथा श्रीराधिका कृपा कोर की महिमा

(३)

गूँधो नेह रस में अगेहन को सूधो बड़ो,
तूधौं वृन्दाबन है ? कि ऊधो मन को अँजोर ।
निधिबन खासी कुञ्ज, सिधिबन दासी जहाँ,
'विन्दु' धन वासी वे, वसे जो धनदासी ठौर ॥
द्वन्द को विनाशै ब्रजभूमि चन्द को स्वरूप,
अगम अनन्द को समुद्र नन्द को किशोर ।
विपति आगाधि का करै ? उपाधि का करै ? औ,
व्याधि का करै ? जो राधिका करै कृपा की कोर ॥

श्रीदेवि प्रार्थना

(४)

तेरी पद रेणुका की शरण गहेरी अम्ब,
ऋद्धि सिद्धि पायन में चेरी ह्व परति है ।
द्वार पै अपार सुख बार बार फेरी देत,
सम्पति कुवेर की कुवेरी निदरति है ॥
ऐसी शुभ कीर्त्ति जब घेरी ही रहत तोहि,
तो फिर न काहे 'विन्दु' ढेरीहू भरति है ।
मेरी दुख पीर दरिदे, री ? वरदे, री देवि ?
शीघ्र वर देरी ? अब देरी क्यों करति है ॥

* * *

भक्त भगवान् से कह रहा है कि आप दो में एक काम अवश्य करें ?

(५)

यातो नींचता मरोड़ दीजिये अघी की नाथ,
या तो नीच मण्डली से मन मोड़ दीजिये ।
या तो दूर ही से हाथ जोड़ दीजिये मुझे भी,
या तो पापियों की पंक्ति में ही जोड़ दीजिये ॥
या तो भण्डा फोड़ दीजिये दयालुता का, यातो-
दम कलि काल शत्रु का निचोड़ दीजिये ।
यातो 'विन्दु' तोड़ दीजिये अधीन बंधन को,
या तो निज दीन बंधु नाम छोड़ दीजिये ॥

⁂

सीताराम राधेश्याम रूप में अभेद

(६)

कंस इन मार्यो उन रावण पछार्यो, ये हैं-
वंशी स्वर धारी, शरधारी वे ललाम हैं ।
वृन्दावन वासी ये , वे दण्डक निवासी बने,
दोऊ शील सिंधु हैं दयालुता के धाम हैं ॥
'विन्दु' कवि श्यामाजू विराजैं इत बाम भाग,
चरित पुनीता सीता राजैं उत बाम हैं ।
नाम, ग्राम, काम, की, जो समता विचारिये तो-
राम हैं, सो श्याम हैं, जो श्याम हैं, सो राम हैं ॥

⁂

भगवान की अनोखी रीझन।

(७)

जिन के जपेते बटमारहू उद्धार होत,
वेई तुझे माखन मही की बटमारी पे।
बक्र भृकुटी पे जो नचावें तीनों लोक, वेई-
नाचत गोविंद ब्रज गोपिन की तारी पे॥
'बिन्दु' जिनके हैं दास ब्रह्मा, विष्णु, शम्भु, वेई-
दासहू के दास बने कीरति दुलारी पै।
वेद की ऋचान पैं जो कबहूँ न रीझे, वेई-
रीझे हैं गोपाल ग्वाल बालन की गारी पैं॥

* * *

एक पतित भगवान से कह रहा है कि यदि हमारी दुर्दशा हुई तो आप ही की बदनामी है।

(८)

पतित अनेक जिन राखी पाप ही की टेक,
तिनहू तुम्हारे द्वार पाई चित्त की चही।
अब नीचताई लख कृपा की सगाई त्यागि,
कैसी बेरुखाई निठुराई नाथ ने गही॥
'बिन्दु' हम अधम निलज्जन की लाज कौनि,
आप ही की बिरद बही पैं दाग है सही।
मान मरयाद न रही जो दीन की तो, दीन-
बन्धु जू तुम्हारी दीन बंधुता कहां रही॥

* * *

श्रीभगवान्नाम कीर्तन करने पर कीर्तन शब्द की व्याख्या

(९)

करिले अधीर तन बिह्वल दशा में, भक्ति--
सरिता नहाय प्रेम नीर तन भरिले ।
नरिले न भोर तन भोग भव रोगन को,
जीह पै जुगल नाम ही रतन धरिले ॥
धरिले गँभीर तन 'बिन्दु' ज्ञान साधन सों,
किन्तु कौन है जो तकसीर, तन हरिले ।
हरिले अहीर तन, तेरी पीर तन, जो तू--
कीर तन ह्वै के श्याम कीरतन करिले ॥

* * *

श्रीश्याम वन्दना माहात्म्य

(१०)

चारो मुक्ति, चारो फल, आठो सिद्धि खोजिबे में,
काहे को अकार व्यर्थ समय दियो करै ।
साँचे प्रेम रङ्ग में रँगाले निज अङ्ग अङ्ग,
संतन को सङ्ग रूपी अमृत पियो करै ॥
एक स्वर्ग में सिधारिबे को कौन बात, नर ?
'बिन्दु' को कथन नेक मानतो लियो करै ।
सब स्वर्ग द्वार तोकूँ बंद ना मिलेंगे, जो तू ?
श्याम नंद नंदना की वंदना कियो करै ॥

* * *

कवि का परिचय

(११)

मौज गरबीला हूँ रँगीला श्याम रङ्ग का हूँ,
कहीं कहीं हेकड़ी हठीला बदनाम हूँ ।
प्रेम की कहानियों का अटल उपासक हूँ,
मूढ़ अभिमानियों से रखता न काम हूँ ॥
नेह नगरी में 'बिन्दु' घूमता सुबह शाम,
हरि सेवकों के लिये मरम कलाम हूँ ।
आशिक हूँ मदन मुरारी गिरधारीजी का,
प्यारी वृषभानु की दुलारी का गुलाम हूँ ॥

* * *

विधाताजी ने शेष नाग को सब कुछ तो दिया, परन्तु कान क्यों न दिये ? इसका कारण

(१२)

दीन्हे हैं विधाता ने अनेक सुख मान दान,
भूमि के प्रमान दीन्हे यश प्रगटावते ।
बदन हजार दीन्हे नैन द्वै हजार दीन्हे,
बचन हजार बोलि मोद उपजावते ॥
पै, न काहे ? शेष को श्रवणहू हजार दीन्हे,
'बिन्दु' कवि वृन्द याको सार समुझावते ।
जानकीश गाथा मुनिपावते फणीश, तौ–
हिलाय शीस लाख बार भूमि पलटावते ॥

* * *

भीष्म और भगवान् प्रतिज्ञा भीष्म ने कहा कि--

(१३)

जो पै वीर पारथ को रथ ना मिलऊँ धूरि,
तौ पै कुरु वंशिन को अंश ही न मानियो।
जो पै मेरे बाण पाण्डवन के न बेधैं प्राण,
तौ पै कहि कायर प्रमाण ही बखानियो॥
'विन्दु' कवि एहो या महारथी के सारथू जू,
तुमही महारथी ह्वै जङ्ग रङ्ग ठानियो।
जो पै ब्रजराज तुम्हें शस्त्र ना गहाऊँ आज,
तौ पै मोहि शान्तनु को तनु हीन जानियो॥

* * *

इस पर भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा कि--

(१४)

भाखत कहाहौ ? ऐसी धारणा न राखो चित्त,
प्रण के विरुद्ध पक्षपात ना विचारिहौं।
सारथी बन्योहौं रथ हाँकिबो है मेरो काम,
न्याय बद्ध युद्ध को नियम ना बिगारिहौं॥
'विन्दु' कवि होतिना प्रतीति जो तुम्हें ? तौ सुनो !
साँची सौंह करिकै समस्त शङ्क टारिहौं।
जो पै एक बापही को सबल सपूत ह्वै हौं,
तौ पै काहू भाँति शस्त्र कर में न धारिहौं॥

* * *

कठिन युद्ध होने पर जब अर्जुन के प्राण संकट का समय आया तो—

(१५)

गंग सुत बानन सों व्यथित बिहाल ह्वै के,
पारथ पुकारयो पाहि पाहि शरणागतो ।
समर ममत्त धाये कान्ह रथ चक्र लैके,
'बिन्दु' कवि जाकी ज्योति रविसम जागतो ॥
त्यागि धनुबान बोले भीषम अहो गोविन्द !
शस्त्र गहि लीन्हो ह्वै है प्रण को कहा गतो ।
करिकै प्रतिज्ञा पितुको काज कीन्ह्यो आज,
एहो ब्रजराज तुम्हें लाजहू न लागती ॥

* * *

श्रीभगवान् कृष्ण ने हंसकर उत्तर दिया कि--

(१६)

बोले घनश्याम सुनों भीषम भगतराज ?
मोहि जन्म देन वारे जग में अपार हैं ।
सिन्धु, खम्भ, पृथ्वी, पाषान, ते प्रकट होन
कहाँलों बखानों ज अमित अवतार हैं ॥
कोऊ कहै 'बिन्दु' वसुदेव देवकी को लाल,
कोऊ कहै नन्द और यशोदा के कुमार हैं ।
जाको एक बाप है बचावै निज लाज सोई,
मेरी कौन लाज मेरे बाप तो हजार हैं ॥

* * *

श्रीशम्भु प्रशंसा।

(१७)

जग में जगा दिया है राममन्त्र ज्योति, मुक्ति-
पथ को दिखा दिया भवानी भरतार ने।
कीर्ति ज्वाल में जला दिया है कलि काल जाल,
सम्पति लुटा दिया अनादिया उदार ने।
'विन्दु' कवि याचकों का मन हरषा दिया है,
सुख बरसा दिया है करुणावतार ने।
करतार ने भी जिन्हें कुछ ना दिया है, उन्हें,
ताज पहना दिया है, नाँदिया सवार ने।।

हमारा भरोसा और उत्साह--

(१८)

सींचे अधर्म के वृक्ष जिते,
उनमें विष के फल फूल फरेंगे।
जीवन राह में और अनेकन,
पाप के पूरे पहार अरेंगे।।
'विन्दु' हमें न कछू डर है,
जो जहान के संकट लाख परेंगे।
है ये उछाह, श्रीजानकीनाह ने,
बाँह गही तौ निवाह करेंगे।।

भगवान श्रीकृष्ण श्रीराधिकाजी से इतना प्रेम करते हैं कि उनके नाम में आये हूये अक्षरों से सम्बन्धित व्यक्ति को भी आदरणीय बना देते हैं—

(१९)

वृषभानुजा के नाते वृषभ मतीनहूँ को,
बुधिमान विद्यावान पण्डित बनावै है।
कीरति दुलारी की सुकीरति पसारिबे को,
कीरति विहीनहू, की कीरति जगावै है॥
गोप की सुता हैं नाते गोप कुल मान राखि,
'विन्दु' ग्वाल बालन को जूठनिहू खावै है।
राधिका के नाम में, है आदि शब्द राधि,
याते श्याम अपराधिहू को कण्ठते लगावै है॥

◆

भगवान श्रीकृष्ण अपने भजन से अधिक श्रीराधिकाजी के भजन पर जीव का कल्याण करते हैं।

(२०)

दोऊ एक रूप वेद भाषत न भेद कछु,
बन्दन दोऊ को भव बन्धन हरत है।
दोहुन की प्रीत एक, रीति एक, नीति एक,
द्वैत भाव आनत ही पातक परत है॥
पतित अधीन दीन तारिबे में दोऊ एक,
तदपि विचार 'विन्दु' कवि यों करत है।
श्याम के रटेते आठ याम में तरत जीव,
राधे के जपेते एक पल में तरत है॥

◆

गजेन्द्र मोक्ष ।

जिस समय भगवान गजोद्धार के लिये चले उस समय की छटा—

(२१)

कमला चकित हो विलोकती किसे है आज ?
भागा जा रहा है क्यों गरुड़ इतना अधीर ।
किसके कपोलों पर कुण्डलों की ताड़ना है ?
किसका उड़ा है नभ में, ये पीतवर्ण चीर ॥
करुणा समुद्र कौन उबल रहा है, देखो ?
दृगों से भी उछल रहा है अश्रु 'विन्दु' नीर ।
हाँ, हाँ, याद आया ! और कुछ भी नहीं है, यह-
करि की पुकार पर हरि की उठी है पीर ॥

* * *

गजेन्द्र की सच्ची पुकार का प्रभाव ।

(२२)

बलहीन इधर गजेश हो रहा था, और--
उधर जलाशय में, सबल जलेश था ।
सिन्धुर समुण्ड सर में समा गया था, एक--
शुन्ड में उठा हुआ कमल पुष्प शेष था ॥
'विन्दु' कवि कमल प्रसून में न जाने क्या था ?
शम्भु का विरञ्चिका कि हरि का प्रवेश था ।
नक्र के लिये वही कमल था कराल चक्र,
करिके लिये वही कमल कमलेश था ॥

* * *

गजेन्द्रार्थ भगवत्प्रादुर्भाव की शीघ्रता।

(२३)

ढूँढ़ कर सर से निकाला है जलज एक,
डूब ही रहा है अब जल में विशाल दन्त।
प्रार्थना सुनाता है कि केवल प्रसून भेंट,
लेकर प्रसन्नता दिखाइये, प्रभो! अनन्त॥
'विन्दु' कवि इस ओर दीनता के, उस ओर-
दीनबन्धुता का भी उदाहरण है ज्वलंत।
करि ने उठाया ज्योंही कमल चढ़ाने को, कि--
होगया प्रकट सा तुरन्त कमला का कंत॥

* * *

वाम कर से गजेन्द्र पाँव खींच कर निकालने का भाव--

(२४)

दक्षिण करस्थ चक्र की कठोर ठोकर से,
जल शूर ग्राह की समस्त शक्ति सोगई।
वाम कर कंज से सम्हाला है करीश पग,
देखते ही विधि शम्भु की भी मति खोगई॥
पीत पट से अँगोछते हैं, पोछते हैं 'विन्दु'
शोभा यह उर अनुराग बीज बोगई॥
मानो वृजराज कहते हैं प्यारे गजराज?
क्षमा करो टेर सुनने में देर होगई॥

* * *

भगवान का गजेन्द्र से अपने आगमन का कारण बतलाना ।

(२५)

आया हूँ न अपनी प्रसंशा सुनने के लिए,
आया हूँ न दीन बन्धुता का मान लेने को ।
आया हूँ न पाने के लिए शतावधान पद,
आया हूँ न दुखकी दशा का ज्ञान लेने को ।।
आया हूँ न 'विन्दु' चारु चक्र गति देखनेको,
आया हूँ न ग्राह से भी युद्ध ठान लेने को ।
आया हूँ न प्राण दान देने को तुम्हें गजेन्द्र,
आया हूँ तुम्हारा कंज पुष्प दान लेने को ।।

मन मकान में भगवान को बसाने का उपाय ।

(२६)

यदि तुझको है चाह शांति लाभ लूटने की,
तो निज बड़प्पन की वासनायें टाल दे ।
अनुभव जनित अखण्ड रस लेना है तो,
चित्त की चलायमान संगति सम्हालदे ।।
अमरत्व सुख का अमृत 'विन्दु' पीना है तो,
प्रेम पथिकों के चरणों में, शीश डालदे ।
भगवान को बिठाना है मन मकान में तो,
पहिले महान अभिमान को निकाल दे ।।

श्याम को सर्वस्य दान

(२७)

तन दे चुके हैं आन बान शान माधुरी पै,
मन दे चुके हैं कान्ह मान माधुरी पै हम।
धन दे चुके हैं मुख पान माधुरी पै,
रोम रोम दे चुके हैं अलकान माधुरी पै हम॥
'विन्दु' बर बैन दे चुके हैं मान माधुरी पै,
नैन दे चुके हैं नैन बान माधुरी पै हम।
कान दे चुके हैं बन्सी तान माधुरी पै और,
प्रान दे चुके हैं मुसक्यान माधुरी पै हम॥

* * *

श्याम सुन्दर किस प्रकार रीझते हैं ?

(२८)

कोटि तप साधि कृश करिले शरीर, किन्तु-
कबहूँ न तन के घटे ते श्याम रीझै हैं।
अन्न, वस्त्र, धेनु, गज, भूमि तू लुटायो करै,
नेकहू न दान के बँटेते श्याम रीझै हैं॥
'विन्दु' योग जप तप संयम नियम धारै-
तदपि न हठ पै डटेते श्याम रीझै हैं।
ग्राम ते न रीझैं धन धाम ते न रीझैं,
एक राधे राधे नाम के रटेते श्याम रीझै हैं॥

* * *

प्रेम-व्याधि

श्रीकृष्ण को दशा देखकर श्री यशोदा सखी से कह रही है ?

(२९)

एरी मेरो वीर, नेक मनमें न आवै धीर,
जानै कौनि पीर कान्ह तनमें विराजै है।
उठि उठि दौर, झक झोरैं ग्वाल बालन को,
बार बार भीति, द्वार देहरी ते बाजै है।
नाचे कबौं अंग अंग भरिके उमंग, कबौं--
मौन गहि अश्रु 'विन्दु' नैनन में साजै है।
बाँधेहू रहैना, काँधे कामरो सुधारि-
आधे आँगनलौं राधेराधे नाम लैले भाजै है॥

* * *

सखी यशोदा को श्री कृष्ण की प्रेम व्याधि का उपाय बताती हैं

(३०)

सुनरी यशोदा एक सरल उपाय, धाय--
धाय-हायहाय करि क्यों विलाप ठानै है।
वेगि वृषभानु की सुता का बुलवाय ले तू,
अबही अधीर कान्ह धीर उर आनै है॥
'विन्दु' जेहि प्रीति पंथ पोथी पढ़ि राखो, सोई-
रसिक गुणज्ञ याकी औषधि बखानै है।
प्रेम की असाधि व्याधि में है वृजराज--
राधिका ही या उपाधि को इलाज करि जानै है।

* * *

एक भक्त का मोक्ष प्राप्ति पर पश्चात्ताप

(३१)

पय पान के लोभ ही ने तो मुझे,
पय सिन्धु पती के अधीन किया।
है गुपाल तो गोरस देगा न क्यों,
इस आश ही में यह दीन जिया॥
पर हा! पय 'बिन्दु' दिया न कभी,
पय के बदले पद मोक्ष दिया।
जिससे जननी के पयोधर का,
पय पान भी कान्ह ने छीन लिया॥

* * *

भगवान किसके क्या हैं?

(३२)

काहू के सपूत हैं औ काहू के पिता हैं,
शिष्य काहू के हैं काहू हेतु गुरुता प्रकास हैं।
काहू के हैं यार काहू के हैं बटमार—
काहू के हैं सरदार काहू के रस बिलास हैं॥
काहू के हैं कुँवर किशोर चितचोर 'बिन्दु',
काहू के कठोर काहू के निगम स्वास हैं।
एते खास खास नातेदारन के पास हैं—
पै दीन हीन दासन के दीन बन्धु दास हैं॥

* * *

जीव नट की, भगवान नटवर से प्रार्थना

(३३)

विश्व रंग मंच के तुमही हो मुख्य सूत्रधार,
मेरे सरकार यह बात भूल जाना मत ।
आठ चार लाख रूप भरके दिखाये तुम्हें,
इससे अधिक मेरी चाकरी बढ़ाना मत ॥
मेरे नाट्य से यदि प्रसन्न होगये हो 'विन्दु',
मोक्ष पारितोष देदो करना बहाना मत ।
यदि अप्रसन्न ही हुये हो तो यही कह दो,
मेरी जग रंग भूमि में तू, अब आना मत ॥

* * *

एक अपराधी अपने अपराध करने का कारण बतला रहा है

(३४)

सिर्फ दर्शनों की ही उठी है अभिलाष, किन्तु,
साधन अनेक साधना है बात दूर की ।
दान करूँ, धर्म करूँ, मन्दिर बनाऊँ दिव्य,
इतनी कहाँ है भला हस्ती मजदूर की ॥
एक ही उपाय अति सरल मिला है 'विन्दु',
शायद इसी से कामना फलैगी क्रूर की ।
करूँगा क़ुसूर तो किसी दिन अदालत में,
जाकर ही देख लूँगा सूरत हुजूर की ॥

* * *

अकारण भगवत् कृपा की अकांक्षा

(३५)

मेरी ज्ञानियों में वर ध्यानियों में,
गुण मानियों में चरचा ही न हो।
कभी 'विन्दु' अदालत में पहुँचूँ,
तो सुकर्म का एक गवाही न हो॥
करदो जो कृपा बिना कारण के,
तो कृपा करने में कोताही न हो।
किसी कारण से करते हो कृपा,
तो कृपानिधि ऐसी कृपा ही न हो॥

श्रवणों के प्रति अभिलाषा

(३६)

डरते ही रहें विषयों से भरी
विष रूप कथा मेहमानियों से।
हरते ही रहें हरि नामावली,
हरबार हरीजन दानियों से॥
करते ही रहें रस 'विन्दु' का पान,
सनेहियों की रस बानियों से।
भरते ही रहें यह कान सदा,
बस कान्ह की मीठी कहानियों से॥

* * *

नेत्रों के प्रति अभिलाषा।

(३७)

बैन नहीं इनके न सही,
कुछ सेन ही से मन की गति भाखैं।
विश्व की मोहन माधुरी त्यागि के,
मोहन की मधु माधुरी चाखैं॥
दीपक रूप पतंग बनी रहैं,
जीवन 'बिन्दु' पै जीवन राखैं।
श्याम लखैं न लखैं इनको,
पर श्याम को यह लखती रहैं आखैं॥

* * *

रसना के प्रति।

(३८)

जो न हुआ प्रभु से अनुराग,
मचाती रही जग राग की वृथा हीं।
जो न पड़ी तुझ पै कभी भूलि कै,
प्रेम कथावली की परछाहीं॥
जो न मिला तुझको हरि नाम,
सुधारस 'बिन्दु' का स्वाद सदाहीं।
जो रस नागर श्याम रटी नहीं,
तौ रसना तुझ में रस नाहीं॥

* * *

भगवत् शरणागति के लिये मन को शिक्षण।

(३९)

यदि टालदे और निकाल भी दे,
यदि घाल दे, मार दे मूठन से।
झिड़की कसै, दीन दशा पै हँसे,
घबरा न कभी उस रूठन से॥
मन जायगा 'विन्दु' कभी न कभी,
तू मनाले उसे सच झूँठन से।
मन ! जा, बन जा तू गुलाम,
वहीं पल जा घनश्याम की जूठन से॥

* * *

भक्ति महिमा।

(४०)

ताको कोटि कोटि हू कुवेर ध्यावै बेर बेर,
चारों वेद बाणी भई समता कहानी की।
कामधेनु कल्पतरु की मति हिरानी जात,
देखि दान शीलता अटूट तेहि दानी की॥
चारि हू मुकित ताको मुख ही निहार्यो करें,
काल पर्यो पौर पदवी पै दरवानी की।
'विन्दु' जब भूलि हू कै जाय परै जाकी ओर,
करुणा कृपा की कोर भक्ति महारानी की॥

* * *

श्री कृष्ण और सुदामा ।

(४१)

पूँछत कृपानिधान कहा मीत जू सूजान,
मेरे हेतु भाभी जू ने दीन्हों सो बिसारि गे ।
"लाओ ! लाओ, देर न लगाओ सकुचाओ जनि,
ऐसे बैन कहत समीप ही सिधारि गे ॥
पोटरी पिछौरा बँधी चाउर की छीनी 'विन्दु',
ताहि छोरि कान्हर जू भाव को विचारि गे ।
मुख में प्रसाद लै सुदामा को त्रिलोकी नाथ,
तीन मूठी तन्दुल पे तीन लोक हारि गे ॥

* * *

सुदामा के तन्दुलों की तौल ।

(४२)

एक मूठी चाउर चबात एक लोक दीन्हों,
दूजी में द्वितीय लोक हू ने मन मोरे हैं ।
तीजी मुख मेलत ही हाथ पटरानी गह्यो,
बोलीं, दै त्रिलोक आप रहे जात कोरे हैं ॥
'विन्दु' मुसकाय बोले कान्हर लजाय, हाय--
हमतो अजौं सकोच सोचन में बौरे हैं ।
मेरी प्रिय भामा ये सुदामा जी के, तीन मूंठी,
तन्दुल की तुलना में तीनों लोक थोरे हैं ॥

* * *

सनातन प्रथा की प्रशंसा ।

(४३)

सेवा में सुकन्या, सत्ययता में अनुसूया
और दृढ़ता बढ़ी है दमयन्ती की कलाओ से ।
शील में सुलोचना, सहिष्णुता में शैल सुता,
नेम प्रेम राधिका सरीखी प्रतिमाओं से ।।
शूरता में उत्तरा, सुभद्रा 'विन्दु' साहस में,
धीरज शकुन्तला की रुचिर कथाओं से ।
सीता सी सती के धर्म पातिव्रत के प्रमाण,
मिलेंगे पुरातन सनातनी प्रथाओं से ।।

सनातन प्रथा की प्रशंशा ।

(४४)

ब्राह्मणत्व वामन से राम से नियम,
और संयम समीर सुत प्रबल भुजाओं से ।
सत्य हरिश्चन्द्र से तपस्यागाधि नन्दन से,
ब्रह्मचर्य भीष्म की अनोखी घटनाओं से ।।
योग श्री वशिष्ठ से प्रयोग भृगु वंशज से,
'विन्दु' रणनीति राधिकेश की कलाओं से ।
मित्रता, पवित्रता, विचित्रता के चारु चित्र,
मिलेंगे पुरातन सनातनी प्रथाओं से ।।

भगवान् की चिन्ता।

(४५)

गिरि से गिराया प्रहलाद को प्रमादियों ने,
सेज सी बनाली कृपा नाथ निज बाहों को।
देवकी दयाकी भीख माँगने लगी तो,
कृष्ण रूप से सजा दी क्रूर कंस के गुनाहों की॥
सजल विलोके 'विन्दु' द्रुपद सुता के नैन,
सोखी शक्ति कौरवपती से नरनाहों की।
मान की न चिन्ता अपमान की न चिन्ता,
उन्हें चिंता है दुखी के आँसुओं की ओर आहों की॥

◆

भगवान की चिन्ता।

(४६)

नेह भरी आँखों से सनेह रखते हैं सदा,
कद्र ही नहीं है वहाँ नीरस निगाहों की।
शत्रुता विचारिये विराध बालि रावण की,
मित्रता अधम गीध भीलनी मलाहों की॥
कभी 'विन्दु' सदन कसाई के सदन बीच,
कभी कीर्त्ति करते कबीर से जुलाहों की।
शाहों की न चिंता खैर ख्वाहों की न चिंता,
उन्हें चिंता है दुखी के आँसुओं को और आहों की॥

◆

श्रीराम और कृष्ण का ऐक्यत्व

(४७)

एक है सुनैया फ़रियाद दुखी दीनन की,
एक निज दासन की लाज को रखैया है।
एक है बढ़ैया चीर द्रोपदी को सभा बीच,
एक प्रहलाद हेत खम्भ ते कढ़ैया है।।
एक है खिलैया 'बिन्दु' बानर कटक साथ,
एक गोकुला को ग्वाल गायन चरैया है।
एक रघुरैया एक कान्हर कन्हैया,
एक धनुष धरैया एक बाँसुरी बजैया है।।

◆

बिना हरि स्मरण मनुष्य शरीर

(४८)

मानी भये दानी भये धनी राजधानी पति,
रूप बुद्धिमानी के भये तो कहा बात है।
सम्पति जगत की सिराय जात सोवत ही,
काहू के शरीर की न राख हू बिकात है।।
'बिन्दु' यह नर तन रतन अमोल है पै,
राम के भजन बिन ऐसो ही लखात है।
बिधु बिनु रात जैसे बुधि बिनु बात जैसे,
छवि बिनु गात जैसे रवि बिनु प्रात है।।

◆

श्रीराधा का उद्धव से वियोग महिमा वर्णन

(४९)

योगी धरैं ध्यान हम ध्यान धीन दोऊ धरैं,
योगी त्यागैं भव हम त्यागे भव भव्य हैं।
योगी गहैं नेम हम नेम प्रेम दोऊ गहैं,
योगी ज्ञानवान हम ज्ञान गुण लभ्य हैं॥
'विन्दु' ब्रह्म अलख उपासक हैं योगीजन,
हम लखि लखि कै लखाइबे की रम्य हैं।
ऊधौ योग त्यागि अब तुमहू वियोगी बनो,
सब भाँति योगी ते वियोगी ही विशेष्य हैं॥

* * *

श्रीराधा की ऊधव से योग रक्षा चेतावनी

(५०)

प्रेम प्रतिमा पै ज्ञान साधन, विराग—
रङ्ग जौन ही चढ़ैगो सोई फीको परि जावैगो।
धीरता, अधीरता को धारण करैगी रूप,
त्यागि अनुराग ही अङ्ग भरि जावैगो॥
ध्यान धारणा की तब खबर परैगी—
जब नैनन की कोरन तै 'विन्दु' ढरि जावैगो।
एकहू वियोग अगनी की चिनगारी परे,
याद राखो ऊधव जी योग जरि जावैगो॥

* * *

श्याम का ऊखल--बन्धन

(५१)

फोर्‌यो श्याम आज निज गृह घट गोधन को,
लेन लागो दूध, दधि विविध हिलोरें री।
ऐसी धूम देखि नन्द रानी कान्ह कञ्ज कर,
दामरी सों बाँधि देन लागीं झकझोरें री॥
गाँठी देत 'बिन्दु' दोय अंगुल परी जा न्यून,
परत न पूरा कोटि बन्धन बटोरें री।
बार-बार कान्ह करते यशोदा रज्जु-ग्रन्थि,
जोरें फेरि छोरें फेरि जोरें फेरि छोरें री॥

◆

मीरा और विष

(५२)

श्याम--पद पंकज का परम पवित्र जल,
श्याम--नाम ही का नाता प्रेषक ने पाला है।
श्याम की ही याद आ रही है जिसे देख कर,
किसी ने कलंक श्याम उर से निकाला है॥
रौप्य--पात्र में है ये हलाहल का 'बिन्दु' नहीं,
राधिका--हृदय ने बृजेश को सम्हाला है।
मेरी जान में तो यह विषधर प्याला नहीं,
श्याम-रंग वाला मेरा गिरधर लाला है॥

◆

(५३)

तूने ही किया है नील कण्ठ नाम शंकर का,
मेरे मन में भी पैदा प्रेम की निशानी कर।
तुझ से हुई है प्रह्लाद की प्रसिद्ध कीर्ति,
मेरी भी उपासना में अटल कहानी कर॥
ऐरे 'विष'--'विन्दु' पूतना--सी राक्षसी से तुझे,
छीन ही लिया गोविन्द ने मनमानी कर।
प्रभु और प्रभु--प्रेमियों के प्यारे पाहुने तू,
स्वीकार मेरे मुख का भी मेहमानी कर॥

* * *

(५४)

गिरधर लाल जी की ससुर--पुरी के सब,
व्यग्र है हमारी लगी लगी लगन छुड़ाने को।
धारण किया समुद्र ने वियोग--वेश और,
सम्पति स्वरूप चली सिन्धु जा लिवाने को॥
राणा राज मंत्री कर्मचारी गण भारी भृत्य,
भेजे गए बार--बार मन समझाने को।
किन्तु जब एक की भी कुछ न चली तो आया-
विष 'विन्दु' श्याम बहिनोई मनाने को॥

* * *

(५५)

आज अभिलाष निज सफल बना जा मन,
मन्दिर में मोहन के संग ही हिलेगा तू।
तेरी और उनकी सदा से निभ आई प्रीति,
इस बार भी उन्हीं की झोंक में झिलेगा तू॥
अस्थियों की सभि संधि शोणित के विन्दु 'विन्दु',
रोम--रोम तन--उपवन में खिलेगा तू।
मेरे विष--'विन्दु' तप तेरा ही अधिक है कि--
प्रभु में प्रथम प्राण पवन में मिलेगा तू॥

❦

प्रेमी की तन्मयता

(५६)

तन त्यागि कर पंच तत्व जो बनूँ तो—
प्रियतमा--आँगन का नभ कहलाऊँ मैं।
तेज जो बनूँ तो मुख देखने के दर्पण का,
पवन बनूँ तो नित्य व्यजन डुलाऊँ मैं॥
मुख मार्जनादि पान स्नान करते हों जहाँ,
'विन्दु' बन वापी कूप सर में समाऊँ मैं।
जिस मार्ग में मृदु चरण धरते हों वह,
महिमामयी उसी मयी में मिल जाऊँ मैं॥

❦

भगवान किस के पुजारी हैं

(५७)

आर्त हैं, अधीन हैं, समस्त साधनों से हीन,
मुख से पुकारते हैं शरण तुम्हारी हूँ ।
ऐसे ही अनाथों को सनाथ करने के लिए,
इस भूमितल का अनेक वेशधारी हूँ ॥
अत्तता का उन की कृतज्ञ रहता हूँ और-
एक अश्रु--'बिन्दु' मात्र पर ही बलिहारी हूँ ।
वे ही सदा पूजनीय मेरे मन-मन्दिर के,
मैं ही उन दीन देवताओं का पुजारी हूँ ॥

* * *

पतित और पतितपावन का साथ

(५८)

पद आपके पातकी-पालक हैं,
तो झुका इन पै यह माथ रहे ।
यदि पंकज की उपमान में हैं—
तो विमिश्रित पंक का पाथ रहे ॥
है प्रसून गुलाब की जो तुलन—
अधि कण्टक का कुछ हाथ रहे ।
नख-मण्डल है शशि-मण्डल-सा,
तो कलंक का 'बिन्दु' भी साथ रहे ॥

* * *

भक्तों का प्राबल्य

(५९)

राज्य करते हैं अकण्टक त्रिलोक पर,
उनको करील कण्टकों पर चलाते हैं ।
व्यञ्जन खिलाते हैं समस्त सृष्टि को जो उन्हें,
ज्वार बाजरों के टुकड़ो पै टरकाते हैं ॥
वस्त्र जो अनेक पहिराते हैं चराचर को,
काली कमली की घोगियाँ उन्हें उढ़ाते हैं ।
'विन्दु' कवि कितना अचम्भा है कि भक्त लोग,
सुख सिन्धु को भी दीनबन्धु बतलाते हैं ॥

⁂

अधम की धमकी

(६०)

अधम-उधारन अधीन बन्धु दीना नाथ,
पदवी सभी उलट पलट धरूँगा मैं ।
एक भी पुराण का न मनूँगा प्रमाण, प्राण-
रहते विरुद्ध प्रण से नहीं डरूँगा मैं ॥
वाणी से बताकर गिराकर दृगों से 'विन्दु',
आप कीर्ति आपकी अखिल में भरूँगा मैं ।
मुझ-से अपावन को पावन करो, नहीं तो-
पावन विरद को अपावन करूँगा मैं ॥

⁂

रूप गर्विता गोपी

(६१)

आवत चकोर चारु चन्द्र विहाय अरु,
मृग राह रोकत कहूँ जो काहू तन जाउँ।
मकरन्द 'विन्दु' त्यागि भाँमरो भ्रमर देत,
टूटत पतंग छिपिवे कहाँ भवन जाउँ ?
रैन दिन देख्यो करैं सब बृज-मण्डल के,
श्याम मद माते भये कासों रो कहन जाउँ ?
याही हेत सामने मुकुर के न राखौं मुख--
हौं हूँ रूप देखि कहूँ बावरो न बन जाउँ ?

* * *

सुदामा का श्री कृष्ण द्वारा पूजन

(६२)

दृग 'विन्दु' धारा द्वारा धोये पद कंज मंजु,
पद-रेणु लाई शीश शम्भु तन छार सी।
पीत पट से ही पोंछने लगे शरीर सब,
निज मुख चन्द्र को दिखाई चारु आरसी ॥
भाल में सुदामा के चढ़ाई पीत चन्दन से,
रेखायें तिलक को त्रिलोक सुख सार सी।
विधि को लिखी हुई दरिद्रता लकीरों पर,
मानो; आज हरि ने लगाई हरतार-सी ॥

* * *

(६३)

सुना है कि परम दरिद्र था, दुखी था सूत--
साबित नहीं था पटके का और जामा का।
द्वारिका-निवासियों का था प्रदर्शनीय वस्तु,
और था खिलौना रुक्मिणी का सत्यभामा का॥
सम्पदा त्रिलोक की तुरन्त उस को दी 'विन्दु',
मान रखा विप्र का मनोर्थ विप्र--बामा का।
दीन-बन्धु थाती मेरे दैन्य में कमी है कुछ,
या तो असत्य है इतिहास ही सुदामा का॥

⁂

उद्धव के प्रति श्री राधिका

(६४)

कौन कहता है--कृष्ण कूबरी का प्रेम इसे,
यह तो विरह--वेदना की दिव्य दीक्षा है।
कामना नहीं है और काम भी नहीं है यह,
जाने क्या अलौकिक अगम्य की समीक्षा है॥
'बिन्दु' दृग के, सपत्नि दुख गिनते हैं नहीं,
इन्हें श्याम के स्वरूप स्मति की प्रतिज्ञा है।
कूबरी के अचल सुहाग की कसोटी पर,
राधिका के स्वर्ण अनुराग की परीक्षा है॥

⁂

(६५)

प्रिय हम को हैं श्याम, श्याम प्रिया कूबरी है;
एक ही सनेह-सरिता से वही धारें दो।
कूबरी प्रसन्न हो तो श्याम भी प्रसन्न होंगे,
पन्थ एक ही में क्यों न कारज सँवारें दो॥
इसी लिए कूबरी सहित ध्यान श्याम का है,
दोनों के लिए हैं दृग 'विन्दु' को फुहारें दो।
मेरे मन-मन्दिर में कान्ह भी हैं कूबरी भी है,
ऊधो, एक म्यान में धरी हैं तलवारें दो॥

प्रभु कहाँ है ?

(६६)

नहिं अन्तर में नहीं बाहर में,
नहीं आम में है नहिं ख़ास में है।
नहिं योग में है नहिं भोग में है,
न विरक्ति में है न विलास में है॥
नहिं वेद विधान में ज्ञान में है,
नहिं संयम 'विन्दु' उपास में है।
न पताल में है न अकाश में है,
यदि प्रेम है तो प्रभु पास में है॥

* * *

मिथिला में श्री रघुनंदन श्री मैथिली की होली के सम्बन्ध में सखियों की वार्ता।

(६७)

आली, उड़ी ख़बर पधारे हैं अवधलाल'
सुनत दुनाली उड़ी रँग भरे थाल की।
शान मतवाली उड़ी होली के खिलइन की,
ख्यालो उड़ी झालो झार अबिर गुलाल को॥
केश-कान्ति काली उड़ी, नाज़ुक ख़याली उड़ी,
ममर खिलाली उड़ी 'विन्दु' नृप-बाल की।
जालो उड़ी आँख को हिलालो उड़ी होठन की,
गाल की गुलाली उड़ी लालो उड़ी लाल की॥

* * *

(६८)

होली में गयो तो भई बावली सखीरी, आज,
छलिया छबीले ने चलाई कछू चाल है।
थकी-सी जकी-सी रंग राम साँवरे को रँगी,
अबलौं शरीर 'विन्दु' व्यथित विहाल है॥
जाने कहाँ धोखे में परो है कछू नयनन में,
कोऊ न सयानी वाको करत सँभाल है।
लाली है तनक-सी सँभाली है जतन करि,
आली, देख आँख में गुलाल है कि लाल है॥

* * *

(६६)

न्यारी भई श्याम मतवारी-सी विकल दशा,
प्यारी कहो कौन रसिया से आज ऊबी हो।
होरी खेलिबे को गईं भोरी बनि आईं कैसे ?
'विन्दु' तुम चतुर सयानी खेल खूबी हो ॥
तन पै सुरंग नीर गाल में अबीर पीर-
हिय में उठी है घोर बनी महबूबी हो।
साँची कहो सजनी, छिपाओ जनि गूढ़ बात,
श्याम--रँग डूबी हो कि श्याम--रँग डूबी हो ॥

सखा--वचन

(७०)

सँभलो सलोनी लोनी लता-सी छटानवाली,
आज अवधेश लाल पग-पग नाँपैगो।
चलेगी चहुँ दिशि ते चोट पिचकारिन की,
चञ्चल चखन 'विन्दु' से गुलाल टाँपैगो ॥
रहेगी न देह गेह की सुधि सनेह देखि,
आनन्द उमंग भरि अंग अंग काँपैगो।
फीके पड़ जायेंगे तुम्हारे पै हजारो रँग,
रोम रोम राम साँवरे को रँग व्याँपैगो ॥

◆

एक बरसाने की गोपी श्याम सुन्दर से कह रही है

(७१)

आये हो उमंग में अहीर बालकों के संग,
लाड़िली लली से रंग जंग की न तुल जाय।
फाग मण्डली से फिर भाग तो सकोगे नहीं,
राग रंग में ही भेद और भी न खुल जाय॥
राधा--रूप 'विन्दु' का प्रभाव पड़ते ही आज,
नन्दलाल लाड़िले की लालिमा न घुल जाय।
प्यारी की सुरंग पिचकारी पड़ते ही कहीं,
साँवले, तुम्हारी श्यामता न घुल जाय॥

* * *

उपालम्भ

(७२)

पातकी न होंगे तो न होगा पाप भार यहाँ,
पीड़ा भी न होगी परमार्थियों के प्राण को।
पीड़ा ही न होगी तो पुकारेगा तुम्हें भी कौन ?
तुम भी न आओगे किसी के तन-त्राण को॥
त्राण ही न होगा तो प्रगट भी करोगे कैसे ?
'विन्दु' मात्र प्रभुता प्रयोग के प्रमाण को।
प्रभुता प्रयोग ही न होगा पातकों पर तो--
काई लग जायगी कृपालुता--कृपाण को॥

* * *

विधि विधान

(७३)

राजा हरिश्चन्द्र को बनायो नीच कुल दास,
बलि को रसातल पठायो एक आन में।
भारि धरि दीन्हों है धरा को वाण बाहुन पै,
नृग की मिटाई शान दान के बखान में॥
नल दमयन्ती में विरह उपजायो 'विन्दु',
पाण्डव प्रताप छीन्यौ बन की लतान में।
अदल बदल करि देत पल लागत ही,
विधि को विधान कौन जानत जहान में॥

* * *

काल करै सो आज कर

(७४)

बलवान, विद्यावान, धनवान हू अनेक,
मन की तरङ्ग लै लै माटी में मिलाइगे।
ऐसी करौं वैसी करौं जैसी तैसी सबै करौं,
सब करि लैहौं यहै सोचत सिराइगे॥
जो पै 'विन्दु' करनी करौ तौ करि डारौ वेगि,
जानै कब अन्तिम दिवस नगिचाइगे।
भारी कीर्ति पाइगे सुकाल के करैया,
और कलि के करैया काल गाल मे समाइगे॥

* * *

नर तन का निरर्थकत्व

(७५)

पति को न पिता न गुरुजन को,
न लह्यो जग में सुखदा गति को ।
गति कोल किरातहु ते बिगरी,
न रुच्यो प्रभु को गुण भारति को ॥
रति को पति 'विन्दु' सप्रेम गह्यो,
न रह्यो शुभ साधन सम्मति को ।
मति को अति मूढ़ भयो नर तू,
न भज्यो वृषभानु सुता पति को ॥

* * *

पश्चात्ताप

(७६)

काज कछू न कियो गृह को,
न बन्यो कबहूँ शुभ वेष मुनीश को ।
कंचन ताज न शीश धरयो,
न मिल्यो अनुराग विराग नदीश को ॥
'विन्दु' रह्यो असमंजस में,
न रम्यो रघुनाथ रम्यो न रतीश को ।
जीवन बीत गयो सिगरो,
न भयो जग को न भयो जगदीश को ॥

* * *

प्रार्थना

(७७)

कोटिन कर्म कुचाल के कीन्हे,
कलंक को टीको गयो कढ़ि मोथ में।
संयम कै न बचायो शरीर,
सुसंगति सीखी न संतन साथ में॥
बातैं बनाई बृथा पर—
गाई गई न गिरा प्रभु के गुन गाथ में।
बूड़त है भव सिन्धु में ,विन्दु',
उबारिबो है अब नाथ के हाथ में॥

* * *

अक्रूर के साथ श्री कृष्ण का मथुरा--गमन।

(७८)

अश्वयान लैकै चले क्रूर कंस पै अक्रूर,
ज्वाल विरहा में गोपग्वाल झरसै लगे।
बृज नर नारि सुधि देह गेह की विसारि,
पीड़ित अपार शोक सार सरसै लगे॥
एते में पधारीं वृषभानुजा अलीन साथ,
देखतही श्याम रूप दृग दरसै लगे।
मानो प्रेम सिंधु से उमड़ि जुग श्याम घन,
घनश्याम मोर हित 'विन्दु' बरसै लगे॥

* * *

हम पशु भी हैं तो कैसे हैं।

(७६)

बंधन और कटे जग के,
अब बंधन प्रेम बँधा करते हैं।
भावना भक्ति उगी बृज में,
उस दूब से 'विन्दु' क्षुधा भरते हैं॥
कान्ह कभी तनपै कमली,
मुरली, लकुटी, दुपटी धरते हैं।
गोकुल छैल चराते हमें,
हम गोकुल बैल बने चरते हैं॥

* * *

ध्यान रक्खें-

१—यदि श्री गोस्वामी पण्डित बिन्दु जी महराज से पत्र व्यवहार करना चाहें तो पते में [प्रेमधाम, श्रीवृन्दावन मथुरा] लिखकर भेजें।

२—यदि पुस्तकों के विषय में या नियम आदि के विषय में कुछ पूछना हो अथवा वी० पी० आदि मँगाना हो तो पते में:—

मैनेजर—प्रेमधाम, ब्रह्मकुण्ड,
वृन्दावन (मथुरा) लिखकर भेजें।

३—उपरोक्त नियम से विपरीत पत्र भेजने पर यदि आपके पत्र का उत्तर न भेजा जा सके, या उत्तर देर में भेजा जाय तो आप शिकायत करने के हकदार न होंगे।

४—यह भी ध्यान रहे कि श्री पं० गोस्वामी जी महाराज के नाम के जो पत्र (बन्द लिफाफे में) होते हैं वह कार्यालय में नहीं खोले जाते ! इसलिये पुस्तक आदि सम्बन्धी पत्र यदि खुले रूप में कार्ड वगैरह भेजें तो उत्तम है।

प्रार्थी—

मैनेजर—कथा कार्यालय,

प्रेमधाम, ब्रह्मकुण्ड वृन्दावन (मथुरा)